अध्याय ५

प्रतिभावान 'गत' रचनाकारों की जीवनी तथा गिनी-चुनी गतों का संकलन

परम्परागत गतों का अध्ययन करते तथा सुनते समय, उनको पेश करते समय, इन बन्दिशों के वादकों एवं रचयिताओं की प्रतिभा, वादनकौशल के बारे में जिज्ञासा उत्पन्न होना स्वाभाविक है। उनकी श्रेष्ठता, सांगीतिक योगदान एवं उनकी जीवनी निश्चित रूप से प्रेरणादायक है। इन बुजुर्गों की जीवनी के साथ तबलावादन की संरचनाओं का तथा विशेषताओं का सौंदर्यात्मक स्वरूप इन विविध बुजुर्गों की विभिन्न गतों या बन्दिशों द्वारा समझना, सीखना, परखना इस अध्याय का उद्देश्य है, ताकि हर एक तबलावादक इन सौंदर्यपूर्ण पारम्पारिक रचनाओं का अध्ययन करें, जो कलात्मक उन्नति के लिए अनिवार्य है। इस अध्याय में बुजुर्गों की जीवनी तथा उनके बन्दिशों के सौंदर्यतत्त्वों का सोदाहरण विवेचन करने का प्रयास किया है।

५.१ उ. बोली बख्श खाँसाहब (दिल्ली घराना)

उ. बोली बख्श खाँसाहब के जन्म तथा मृत्यु की तिथियाँ उपलब्ध नहीं हैं। परन्तु उनके पुत्र उ.नत्थू खाँसाहब का जन्म सन १८७५ में हुआ था। अत: अनुमान किया जाता है कि उनका जन्म सन १८४५-१८५० के दरमियान हुआ होगा। उ. बोली बख्श खाँसाहब ने तबलावादन की तालीम अपने पिताजी दिल्ली घराने के ख्यातनाम उ. बड़े काले खाँ से प्राप्त की थी।

उ. बोली बख्श खाँसाहब ने अपने समय में बहुत कीर्ति प्राप्त की थी। वे खलीफा की उपाधि से सम्मानित थे। उन्होंने दिल्ली के साथ-साथ पूरब घराने का तबला भी अनेक उस्तादों से याद किया था। अपने वादन में पेशकार, कायदा, रेला इन प्रकारों के बाद वे पूरब शैली में पूर्वसंकल्पित रचनाएँ बजाया करते थे। उ. बोली बख्श खाँसाहब सोलो वादन में दिल्ली अंग से पेशकार, कायदा, रेला

बजाने में सिद्धहस्त थे। वादन के उत्तरार्ध में पूरब की शैली में गत, टुकड़े, चक्रदार आदि प्रस्तुत किया करते थे। इस प्रकार दोनों अंगों का वादन उनके वादन में समाहित था।

उ. बोली बख्श खाँसाहब उत्कृष्ट रचनाकार भी थे। उ. हाजी विलायत अली खाँसाहब की रचनाओं का प्रभाव उनकी रचनाओं पर था। उनके द्वारा बनाई हुई रचनाएँ पूरब अंग की होकर भी उन पर फर्रुखाबाद की स्पष्ट छाप दिखाई देती थी। वे एक सशक्त रचनाकार थे, परन्तु क्लिष्ट रचनाओं के कारण उनकी रचनाएँ बजाना आसान नहीं था। इन रचनाओं को बजाने के लिए बहुत अभ्यास की आवश्यकता होती थी। उनकी रचनाएँ समृद्ध एवं श्रमसाध्य थीं।

उ. बोली बख्श खाँसाहब के पुत्र उ. नत्थू खाँसाहब अपने समय के श्रेष्ठ कलाकार थे। वे उ. बोली बख्श खाँसाहब के विषय में कहा करते थे कि दिल्ली घराने में उनके जैसा कलाकार दूसरा नहीं हुआ। उनके पुत्र उ. नत्थू खाँसाहब के अतिरिक्त उनके शिष्य परिवार में सर्वाधिक प्रसिद्ध उ. मुनीर खाँसाहब थे एवं बाबासाहेब, भोलानाथ, अल्लादिया खाँ आदि शिष्यों के नाम उल्लेखनीय थे।

५.१.१ ‘‘**आसम गत** ताल-त्रिताल रचना - उ. बोली बख्श खाँसाहब

कतऽऽऽधिरधिर	किटतकतकिट	धाऽऽऽ	तकिटधाऽऽ ।	
x				
ऽऽऽतकिट	धाऽतिरकिटतक	धाऽतिरकिटतक	धिननेनाऽऽन ।	
२				
ऽऽऽतकिट	धाऽतिरकिटतक	धाऽतिरकिटतक	धिननेनाऽऽन ।	
०				
ऽऽऽतकिट	धाऽतिरकिटतक	धाऽतिरकिटतक	धिननेनाऽऽन ।	धा’’ १
३				x

उपरोक्त गत में ‘धिरधिरकिटतक तकिट धा’ वाक्यांश फर्रुखाबाद घराने की खास बोलपंक्ति है। पाँचवीं मात्रा से आठवीं मात्रा तक तीन बार पुनरावृत्त होनेवाली बोलपंक्ति एवं ‘धिननेनाऽऽन’ बोल की योजना रचना में नजाकत पैदा करती है और गत सुंदरता से सम पर आती है।

५.२ उ. नत्थू खाँसाहब (दिल्ली घराना)

दिल्ली घराने के महान तबलावादक खलीफा उ. नत्थू खाँसाहब का जन्म सन १८७५ में दिल्ली के प्रतिष्ठित संगीतज्ञ परिवार में हुआ था। इनके पिता उ. बोली बख्श खाँसाहब और पितामह उ. काले खाँसाहब दिल्ली घराने के श्रेष्ठ तबलानवाज़ थे। इन्हीं धुरंधर कलाकारों से उ. नत्थू खाँसाहब ने तबले की उच्चस्तरीय शिक्षा प्राप्त की थी।

दिल्ली घराने का सर्वज्ञात कायदा 'धातीट धातीट धाधातीट धागे तिनाकिन' उनको बहुत प्रिय था। वे इस कायदे के विविध प्रकार के बल बजाकर वादन में सौंदर्यनिर्मिति करते थे। हर एक कायदे की स्वाभाविक गति एवं उसीसे निर्माण होनेवाला सौंदर्य इनके बारे में उनका गहरा अध्ययन था। हर एक कायदा उसके निर्धारित गति में ही बजना चाहिए, कम-अधिक गति में बजाने से उसकी सुन्दरता नष्ट हो जाती है, ऐसा उनका विचार था। विशिष्ट कायदे वे अकल्पनीय गति में बजाया करते थे। दो उँगलियों के 'धिरधिर' के कायदे वे बहुत ही तेज गति में बजाते थे। दायें-बायें का वजन, बोलों के स्पष्ट निकास और प्रतिभासंपन्न कलात्मक विस्तार ये उनके वादन की विशेषताएँ थी।

रोज रोज सोलह-अठारह घंटे रियाज के कारण दिल्ली घराने की कई मुश्किल रचनाओं पर उ. नत्थू खाँसाहब ने उच्च कोटि की प्रवीणता पायी थी। दिल्ली घराने का अनुशासन, विचार-परम्परा, स्वयं की असामान्य निर्मिति-क्षमता, प्रतिभा, सौंदर्यविषयक स्वतंत्र दृष्टिकोण इन्हीं के कारण उ. नत्थू खाँसाहब की रचनाएँ दिल्ली की असली रचनाएँ ही प्रतीत होती थी। उनके द्वारा किया गया रचनाओं का विस्तार संपूर्ण रूप में घरानेदार और कलात्मक हुआ करता था। ''उ. नत्थू खाँसाहब की प्रतिभायुक्त विस्तार-क्रिया के विषय में बोलते समय उ. हबीबुद्दीन खाँसाहब ने अत्यंत नम्रतापूर्वक यह उद्‌गार प्रकट किए थे - ''हमारे उस्ताद नत्थू खाँ जब तबला बजाते थे, तब वे सोने की स्याही से तबला लिखते थे। इस विधान का अर्थ यह है, कि नत्थू खाँसाहब जो कुछ बजाते थे, वह अन्य वादकों एवं विद्यार्थियों के लिए अनुकरणीय आचरण का पाठ ही बनता था।'' २ उ. नत्थू खाँसाहब ने किनार के बाज में जो आकर्षण और सम्मोहन पैदा किया था, वह इनके बाद कभी सुनने

में नहीं आया। इन्होंने इस बाज का प्रतिनिधित्व करते हुए खलीफा जैसी सम्मानित उपाधि प्राप्त की थी।

इस कुशल, यशस्वी कलाकार का उत्तरार्ध कलकत्ता में व्यतीत हुआ था। वहाँ उन्होंने काफी यश प्राप्त किया था। 'हिज मास्टर्स व्हॉईस' ग्रामोफोन कंपनी ने इनके चमत्कारपूर्ण तबला वादन की स्मृति सुरक्षित रखने हेतु इनके स्वतंत्र तबला वादन का एक रिकार्ड भी तैयार किया था। चमत्कारपूर्ण तबला वादन के कारण उ. नत्थू खाँसाहब का स्मरण आज भी अत्यन्त आदर और सम्मान के साथ किया जाता है।

इनके तबला वादन ने न केवल सामान्य संगीत श्रोताओं को बल्कि संगीत के सुयोग्य कलाकारों को भी अपनी ओर आकृष्ट किया था और उन कलाकारों ने इनकी शिष्यता स्वीकार की थी। इनके शिष्यों में उ. हबीबुद्दीन खाँ, हरेन्द्र किशोर राय चौधुरी तथा केशवचन्द्र बॅनर्जी के नाम विशेष उल्लेखनीय थे।

६५ वर्ष की उम्र में सन १९४० में उ. नत्थू खाँसाहब ने जीवन की अन्तिम साँस ली।

५.२.१ ''खासे की गत ताल-त्रिताल रचना - उ. नत्थू खाँसाहब

धीक	धिन	धिन	नगधिंऽ ।	
x				
न्नगतिरकिट	धिंऽनग	तिंऽनग	तिरकिटतक ।	
२				
तीक	तिन	किन	नग धिंऽ ।	
०				
न्नग तिरकिट	धिंऽनग	तिंऽनग	तिरकिटतक ।	धा'' ३
३				x

'खासा' यह 'खास' शब्द से बना है, जिसका अर्थ है खासियत (खूबी)। उ. नत्थू खाँसाहब की त्रिताल में निबद्ध इस गत में १ से ४, ९ से १२ एवं ६, ७, १४,१५ मात्राएँ चतस्त्र जाति में रचायी गयी हैं। ५, ८, १३, १६ मात्राओं पर तिस्त्र जाति में छह अक्षरों का प्रयोग बड़ी खूबी से

किया है। ६, ७ एवं १४,१५ मात्राओं पर आनेवाले 'धिंऽनग तिंऽनग' शब्दों ने रचना का सौंदर्य बढ़ा दिया है।

५.३ उ. गामे खाँसाहब (दिल्ली घराना)

उ. गामे खाँसाहब दिल्ली घराने के सुप्रसिद्ध तबलानवाज उ. छोटे काले खाँसाहब के सुपुत्र थे। इनका जन्म दिल्ली में हुआ था, परन्तु इनके जन्मतिथि की जानकारी प्राप्त नहीं हुई। उ. गामे खाँसाहब ने पाँच वर्ष की अल्पायु में अपने पिताजी से तालीम लेना प्रारम्भ किया था। जब खाँसाहब पंद्रह बरस के थे, तब उनके पिताजी का देहान्त हुआ था।

पिताजी की छत्र-छाया उठ जाने के बाद पिताजी से प्राप्त ज्ञान एवं तालीम पर अविश्रांत रियाज, अभ्यास करके उन्होंने तबले पर कमाल का प्रभुत्व पाया था और अपनी कला को ऐसा निखारा था कि ३०-३५ वर्ष की उमर में उनको कलाकारों की प्रथम पंक्ति में लाकर खड़ा कर दिया था। दिन में कई घंटे वे तबले के विश्व में डूब जाते थे।

दिल्ली घराने के प्रसिद्ध उ. गामे खाँसाहब अपने घराने के श्रेष्ठ प्रतिनिधि होने के कारण 'खलीफा' उपाधी से सम्मानित किए गए थे। वे लम्बे समय तक अपने सोलो वादन एवं संगति के लिए आकर्षण के केन्द्र बने रहे। भारत में अनेक संगीत सभा में उन्होंने माहोल बना दिया था। बड़े-बड़े तबलीये एवं कलाकार इनका आदर करते थे। इनका कार्यक्षेत्र मुख्यत: मुम्बई रहा।

उ. गामे खाँसाहब के पुत्र उ. इनाम अली खाँसाहब ने खूब नाम कमाया। उ. गामे खाँसाहब के उल्लेखनीय शिष्यवर्ग में उ. फकीर मोहम्मद खाँ उर्फ पीरू भाई, उ. तुफैल खाँ (मुम्बई), उ. अकबर हुसेन उर्फ बल्लू खाँ, उ. महंमद अहंमद खाँ, पं महादेव इन्दोरकर (मुम्बई), श्री. रिजराम देसाढ़ (रतलाम), फिल्म जगत के प्रसिद्ध श्री. मारूतिराव कीर (मुम्बई), इकबाल हुसेन, आयाभाई सेठ इनका समावेश था।

उ. गामे खाँसाहब सन १९५८ को पाकिस्तान में पैगंबरवासी हुए।

५.३.१ ‘‘**गत** ताल -त्रिताल रचना - उ. गामे खाँसाहब

धागेतक	धागेतक	तकदिन	नगतक ।
x			
धिननाग	धिनगिन	धागेतिरकिट	तिनाकिना ।
२			
तागेतिट	धागेतिट	घिनाऽत्त	धागेतक ।
०			
धिननाग	धिनगिन	धागेतिरकिट	तिनाकिना । धा’’ ४
३			x

प्रस्तुत गत चतस्त्र जाति की सरल गत है। ग्यारहवीं मात्रा पर किया हुआ अवग्रह का प्रयोग (घिनाऽत्त), रचना को सुंदर मोड पर ले जाता है।

५.४ उ. इनाम अली खाँसाहब (दिल्ली घराना)

दिल्ली घराने के खलीफा एक प्रतिभावान कलाकार उ. इनाम अली खाँ का जन्म प्रतिष्ठित संगीतज्ञों के परिवार में १२ नवंबर १९२८ को हुआ था। दिल्ली घराने के विद्वान, ज्येष्ठ एवं मशहूर तबलानवाज उ. गामे खाँसाहब के वे सुपुत्र थे। उन्हें दिल्ली घराने की सम्पूर्ण तालीम उनके पिता उ. गामे खाँ एवं चाचा उ. मुन्नू खाँ से प्राप्त हुई थी।

उ. गामे खाँ के बाद उ. इनाम अली खाँसाहब दिल्ली घराने के खलीफा पद के उत्तराधिकारी थे। बचपन से ही तेज तर्रार ताबलिक के रूप में चर्चित उ. इनाम अली खाँसाहब के आकाशवाणी कार्यक्रमों का सिलसिला दस वर्ष की अल्पायु से ही आरम्भ हो गया था। दिल्ली बाज के इस सच्चे प्रतिनिधि के वादन में दिल्ली बाज की सम्पूर्ण विशेषताएँ प्रतिबिम्बित होती थी। उन्होंने अपनी वादनशैली को उच्च स्तर तक पहुँचा कर दिल्ली घराने का नाम रोशन किया था।

उ. इनाम अली खाँ के वादन पर उनके गुरू की एवं घराने की छाप दिखाई देती थी। किन्तु पेशकार, कायदा वादन में उनकी स्वयं की सौंदर्य-दृष्टि, विलक्षण प्रतिभा एवं निज़ी कला व्यक्तित्व की अनुभूति मिलती थी। उ. इनाम अली खाँसाहब के तबलावादन में उनके मामा श्रेष्ठ तबलावादक

उ. नत्थू खाँसाहब के खास निकास शैली का असर भी प्रतीत होता था। उनका तबलावादन घराने के अनुशासन सहित एवं नवनिर्मित साहित्य से युक्त रहता था।

'दो उँगलियों का बाज' यह उ. इनाम अली खाँसाहब के वादन की खासियत थी। इसलिए दिल्ली घराने का असली, विशुद्ध, अभिजात तबला उनसे सुनने को मिलता था। हाथ की तैयारी, ताल, लय, पेशकार, कायदा, रेला इन पर सखोल चिंतन ये उनके वादन की महत्त्वपूर्ण विशेषताएँ थी। मींड अथवा घुमारा के बदले बायें पर उँगलियों के इशारों को वे अधिक महत्त्व देते थे। पं. माईणकर के पुस्तकानुसार ''उनके वादन के वैशिष्ट्य थे - उनका तबले पर का शास्त्रशुद्ध हाथ, दिल्ली घराने के वैशिष्ट्यों को परिणामकारकता के साथ प्रस्तुत करनेवाला उनका निकास और रचना की कलात्मक अद्वितीय विस्तार-प्रक्रिया। उनकी 'कायदे' की रचनाएँ आकार में छोटी होती थी। किन्तु, एकाध कली खिलकर जिस प्रकार सुंदर फूल में रूपांतरित हो जाती है, उसी प्रकार अपनी उक्त रचनाओं का विस्तार वे इस प्रकार किया करते थे कि मानो उस कली की एक-एक पंखुड़ी नाजुक रूप में और लीलया सुलझती जा रही हो, और धीरे-धीरे उस कली का सुंदर खिले हुए फूल में रूपांतर हो।'' ५

उ. इनाम अली खाँ ने उच्चस्तरीय तबलावादक के रूप में ख्याति अर्जित की थी। सन १९६० के आसपास वाराणसी के गुदई महाराज के साथ दिल्ली में इनकी जुगलबन्दी भी हुई थी, जिसमें दोनों कलाकारों ने चार-चार घंटे तक अपने-अपने घराने की विशेषताओं को प्रदर्शित करके लोगों को चमत्कृत कर दिया था। उ. इनाम अली खाँ, दो उँगलियों से बजनेवाली अपनी वादन शैली की चाटप्रधान गतों को नजाकत एवं सक्षमता के साथ प्रस्तुत किया करते थे। कभी-कभी पूरब अंग की गतें भी अत्यंत स्फूर्ति से बजाया करते थे। छोटे-छोटे चलन, लग्गी भी वे परिणामकारकता के साथ बजाया करते थे। किन्तु अक्सर उनका मन पूरी तरह दिल्ली के पेशकार, कायदे एवं उनके विविध विस्तार क्रियाओं में रहता था। उनके मतानुसार त्रिताल ही समबद्ध आकार का चतस्त्र जाति का ताल है, जिसमें सर्वांगसुंदर एवं सर्वांग परिपूर्ण रचनाएँ हुई हैं और नवीन सुंदर रचनाएँ भी बाँधी जा सकती

हैं। शुद्ध वाणी के साथ उनके धा, धीं, घे, के बोलों के उच्चार में बाँये के घुमार का गहरा ध्वनि रचना को सजीव बनाता था। उनकी पढंत में उच्च स्तर का अनोखा आनंद मिलता था।

अनेक अमेरिकी और युरोपीय देशों की सफल संगीत यात्रा कर चुके खाँसाहब दिल्ली के भारतीय कला केन्द्र एवं दिल्ली विश्वविद्यालय के संगीत संकाय से भी वर्षों तक जुड़े रहे थे।

उ. इनाम अली खाँसाहब के सुपुत्र उ. गुलाम हैदर दिल्ली विश्वविद्यालय में तबलावादक थे। खाँसाहब के प्रमुख शिष्यों में आन्तरराष्ट्रीय ख्यातनाम उ. फैय्याज खाँ, उ. लतीफ अहमद खाँ का समावेश था। इनके शिष्यों में पं. मारूतिराव कीर, उ. लतीफ अहम्मद खाँ एवं पं. सुधीर माईणकर उल्लेखनीय हैं।

दिल्ली घराने के इस प्रतिष्ठित ताबलिक का निधन २८ जनवरी १९८८ को मुम्बई में हुआ।

५.४.१ ‘‘**गत** दिल्ली घराना ताल - त्रिताल रचना - उ. इनाम अली खाँसाहब

धागेतिट	कताधागे	तिटकता	धागेतिरकिट।
x			
धीनागीना	धाऽ	ऽऽ	धागेतिरकिट।
२			
धीनागीना	धाऽ	ऽऽ	धागेतिरकिट।
०			
धीनागीना	धागीतिट	धागेतिरकिट	तीनाकिना।
३			
तागेतिट	कतातागे	तिटकता	तागेतिरकिट।
x			
तीनाकिना	ताऽ	ऽऽ	तागेतिरकिट।
२			
धीनागीना	धाऽ	ऽऽ	धागेतिरकिट।
०			
धीनागीना	धागीतीट	धागेतिरकिट	धीनागीना। धा’’ ६
३			x

उ. इनाम अली खाँसाहब दो उँगलियों की सहायता से बजनेवाली अपनी वादनशैली की यह चाटप्रधान रचना अत्यंत नजाकत एवं सशक्तता के साथ प्रस्तुत किया करते थे। सामान्यत: जल्द लय में 'तिरकिट' शब्द के बदले 'त्रक' शब्द का प्रयोग करने का रिवाज़ है। किन्तु घराने की शुद्ध परम्परा सुरक्षित रखने हेतु उ. इनाम अली खाँ 'तिरकिट' शब्द का प्रयोग करना पसंद करते थे। फलत: यह गत परिणामकारक होती है।

५.५ उ. हबीबुद्दीन खाँसाहब (अजराड़ा घराना)

अजराड़ा घराने को एक नई दिशा एवं नई पहचान देनेवाले श्रेष्ठ कलाकार उ. हबीबुद्दीन खाँसाहब का जन्म सन १८९९ को मेरठ (उ. प्र.) में हुआ। उनके पितामह उ. हस्सू खाँ और प्रपितामह उ. काले खाँ तबले के विद्वान थे। उनके पिता खलीफा उ. शम्मू खाँसाहब अजराड़ा घराने के अद्वितीय तबला-नवाज़ थे। उ. हबीबुद्दीन खाँसाहब ने १२ वर्ष की उमर में अपने पिता उ. शम्मू खाँ के पास तालीम लेना प्रारम्भ किया। उन्होंने १५ वर्ष की कठोर तपश्चर्या करके अपने घराने की शिक्षा प्राप्त की। उसके बाद एक प्रभावी वादक के रूप में ख्यातनाम होने पर भी दिल्ली घराने के प्रतिभावान तबला-नवाज़ उ. नत्थू खाँसाहब का गंडा बाँध कर उनसे दिल्ली घराने की बारीकियों को विधिवत् सीख कर विद्या ग्रहण कर ली। उसके पश्चात् उ. मुनीर खाँसाहब के शागिर्द बन कर शिक्षा प्राप्त की।

अनेक घरानों की तालीम तथा संस्कार प्राप्त होने से उनका स्वयं का बाज अधिक सुंदर, समृद्ध एवं प्रभावी बन गया था। खाँसाहब के हाथ में वह जादू था कि जहाँ वे बजाते थे, बेजोड़ बजाते थे। विलक्षण मिठास एवं उँगलियों की प्रचंड तैयारी ये उनकी वादन विशेषताएँ थी। उनके वादन में गतिमानता का सौंदर्य साकार हुआ करता था। बायें पर उनकी हुकूमत थी। 'घेतक घेतक दिंगदिनागिन' शब्दप्रयोग वे तैयारी से और कर्णमधुर नादों के जरिए प्रस्तुत किया करते थे। अजराड़ा घराने के तिस्त्र जाति के कायदों के साथ-साथ अजराड़ा के चतस्त्र जाति के कायदों का प्रभावी प्रयोग उनके प्रस्तुतिकरण में सुनने को मिलता था। लयबंधों के द्वारा एक अलग सी आकर्षक

चमत्कृति से वे श्रोताओं को खुश किया करते थे। मूल अक्षर एक गुना में जिन उँगलियों एवं निकासों से प्रस्तुत होते थे, उन्हें वे निकासों के मार्गों को कलात्मकता से बदल कर चौगुन में ऐसा प्रस्तुत किया करते थे कि चौगुन में सुनते समय वह रचना अत्यंत शुद्धता के साथ बजने का आभास होता था। वे 'रव' को अत्यन्त प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया करते थे।

स्वतंत्र तबलावादन, गायन और तंतूवाद्य की साथसंगत में वे माहिर थे। उन्हें अखिल भारतीय संगीत सम्मेलन, लखनऊ में 'संगत-सम्राट' की उपाधि से सम्मानित किया गया था। भारत में अनेक संगीत सभा में यशस्वी तबलवादन कर वे संगीत जगत में चमके थे। १९७० में उत्तर-प्रदेश संगीत नाटक अकादमी ने उन्हें पुरस्कार देकर सम्मानित किया था। तत्कालीन प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू ने उन्हें स्वर्ण पदक प्रदान किया था। राष्ट्रीय स्तर के संगीत सम्मेलनों में उन्होंने तहलका मचा रखा था। दिल्ली और मुंबई नभोवाणी केंद्र से उनके तबलावादन की रिकार्डे बजाया करती थी।

उनके शिष्यों में सुपुत्र उ. मंजीखाँ, उ. हशमत अली खाँ, उ. रमजान खाँ, पं . श्रीधर, पं सुधीर सक्सेना उल्लेखनीय थे।

पक्षाघात का प्रकोप एवं स्मृतिभंश होकर २० जुलाई १९७२ में खाँसाहब इस लोक से चले गए।

५.५.१ दोमुखी गत रचना - उ. हबीबुद्दीन खाँसाहब डॉ. अजय अष्टपुत्रेजी से प्राप्त

धिनघिडनग	तिटकताऽनु	धिरधिरघिडनग	धिनतक ।
x			
तकिटतकिट	तकघिडनग	धिरधिरघिडनग	धिनतक ।
२			
क्रधींता	धाधींता	धिरधिरघिडनग	धिनतक ।
०			
धिनघिडनग	तिटकताऽनु	धिरधिरघिडनग	धिनतक । धा
३			x

इस गत के प्रारम्भ एवं अन्त की बोलपंक्ति समान है, इसलिए इसे दोमुखी गत कहा है। हर एक पंक्ति के अन्त में 'धिनतक' होने के कारण चार अक्षरी यमक मिलता है।

५.६ प्रो. सुधीरकुमार सक्सेना (अजराड़ा घराना)

प्रो. सुधीरकुमार सक्सेनाजी का जन्म ५ जुलाई १९२३ को उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ जिले में हुआ था। उनके पूर्वजों का वास्तव्य मेरठ में था। ''उनके पिता श्री सदानन्द सक्सेनाजी व्यवसाय से शिक्षक थे और अच्छे लेखक भी थे। उनकी माता श्रीमती कृष्णाकुमारी सक्सेनाजी उस जमाने में गाज़ियाबाद की प्रथम महिला काउन्सलर थी। पंडितजी के सात भाई-बहन थे। पंडितजी के बड़े भाई पद्मभूषण डॉ. सुशीलकुमार सक्सेनाजी है। पंडितजी के सभी भाई-बहन समाज में प्रतिष्ठित व्यक्तित्व रखते है। उनके परिवार पर माँ सरस्वती की असीम कृपा रही है।'' ७

पं. सक्सेना जी बचपन से ही संगीत के शौकीन थे। उन्होंने १२-१३ वर्ष की आयु में गाज़ियाबाद के उस्ताद बुंदु खाँसाहब से तबले का प्रारम्भिक प्रशिक्षण लिया। उन्होंने विभिन्न किताबें पढ़कर तबला सीखने की कोशिश की और महसूस किया कि केवल किताबें पढ़ने से कोई तबला बजाना नहीं सीख सकता हालाँकि उन्होंने अपने मामा दिल्ली के पंडित प्रसादलालजी के अधीन प्रशिक्षण लेने की शुरूआत की, जिन्होंने उन्हें विकसित होने के लिए प्रोत्साहित किया। इसके बाद इस क्षेत्र में प्रगति करने हेतु उन्होंने उचित गुरु से प्रशिक्षण प्राप्त करने का निर्णय लिया और सन १९३९ में मेरठ निवासी अजराड़ा घराने के तबला-नवाज़ खलीफा उ. हबीबुद्दीन खाँसाहब के गंडाबंध शागिर्द बनकर उन्होंने तबले की विद्या अधिग्रहण करना प्रारम्भ किया। लगातार मेहनत करके तीन वर्षों की अवधि में उन्होंने कला स्नातक की डिग्री संपादन की। उन्होंने उ. हबीबुद्दीन खाँसाहब से वर्षों तक तबला वादन की शिक्षा प्राप्त कर एक कलात्मक रूप में अभ्यास किया। अपने उस्ताद से उन्होंने तबला के अजराड़ा एवं दिल्ली घराने की वादनशैली को आत्मसात करके व्यापक प्रशिक्षण प्राप्त किया। जबरदस्त प्रयास और कडी मेहनत से उन्होंने अजराड़ा घराने की झांकि तथा बारीकियों का ज्ञान गहराई से संपादन करके प्रभुत्व प्राप्त किया एवं अपनी बुद्धि से इसे

और विकसित किया। तबलावादन की शिक्षा के साथ-साथ ही पं. सक्सेनाजी ने १९४४ में मेरठ विश्वविद्यालय से अंग्रेजी, साहित्य, तत्त्वज्ञान एवं राजनीति विज्ञान के साथ स्नातक की उपाधि प्राप्त की।

प्रो. सक्सेनाजी आकाशवाणी के 'ए' श्रेणी कलाकार थे। सन १९४५ से १९४८ तक पंडितजी आकाशवाणी के कलकत्ता एवं दिल्ली रेडीओं के स्टाफ कलाकार थे। सन १९५० में बम्बई में उनके एक कार्यक्रम में गुजरात के 'दि महाराजा सयाजीराव युनिवर्सिटी बडोदा' की प्रथम उपकुलपति श्रीमती हंसाबेन मेहताजी उपस्थित थी। उनके तबला वादन का प्रदर्शन सुनकर श्रीमती मेहताजी ने सक्सेनाजी को म्यूजिक कालेज अर्थात् आज की फॅकल्टी ऑफ परफॉर्मिंग आर्टस् के वाद्य विभाग में आमंत्रित किया। सक्सेनाजी ने आदरपूर्वक इस प्रस्ताव को स्वीकार किया और सन १९५० से १९८३ तक तैंतीस साल गुजरात के 'दि सयाजीराव युनिवर्सिटी बडोदा' से वे जुड़े रहे। उन्होंने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग दिल्ली के संगीत रिसर्च कमिटी के सदस्य के रूप में भी कार्य किया था। सन १९६५ में पंडितजी गुजरात की सुप्रसिद्ध सुगम संगीत गायिका श्रीमती प्रज्ञाछायाजी से मांगलिक बंधन में बंधे। पंडितजी की तबलावादन की उपासना में श्रीमती प्रज्ञा सक्सेनाजी का बड़ा सहयोग था। उनकी दो सुपुत्रियाँ सुमधुर गायिका हैं, उनमें से एक हीना सक्सेनाजी अहमदाबाद में व्याख्याता और दूसरी अर्चना सक्सेनाजी कॅनडा में कार्यरत है। तबला प्रोफेसर के रूप में तैंतीस वर्षों तक संस्था की सेवा करने के बाद पं. सक्सेनाजी सन १९८३ में 'दि महाराजा सयाजीराव युनिवर्सिटी बडोदा' के फॅकल्टी ऑफ परफार्मिंग आर्टस् के संगीत विभाग प्रमुख पद से सेवानिवृत्त हुए।

प्रो. सुधीरकुमार सक्सेनाजी एक विनम्र व्यक्ति, ख्यातनाम अग्रणी तबला कलाकार, सच्चे गुरू एवं अच्छे प्रोफेसर थे। देश के असंख्य प्रतिष्ठित संगीत समारोह में उनके तबलावादन के कार्यक्रम हुआ करते थे। उन्होंने दिल्ली, मुंबई, लखनऊ, कलकत्ता, बनारस जैसे शहरों में अपनी कला का प्रदर्शन किया था। वे एक प्रख्यात तबलावादक के रूप में पहचाने जाते थे। उन्होंने उ. अल्लाउद्दीन खाँ (सरोद), पं. रविशंकर, उ. अलीअकबर खाँ, उ. विलायत अली खाँ, उ. हलीम जाफर खाँ (सितार), पं. गजानन जोशी, पं. व्ही. जी. जोग, डॉ. एन. राजम्, पं. डी. के. दातार

(व्हायोलीन), पं. रामनारायण (सारंगी), उ. फैय्याज खाँ, उ. निसार हुसेन खाँ, पं. ओंकारनाथ ठाकुर, पं. जसराज, श्रीमती सिद्धेश्वरी देवी, श्रीमती रसूलनबाई, श्रीमती बेगम अख्तर जैसे भारत के कई ख्यातिप्राप्त कलाकार, बेहतरीन गायक और तंतकारों की तबला संगत की थी। पं. सक्सेनाजी ने कथ्थक नृत्यकार पं. शम्भू महाराज, पं. लालमोहन लाल, श्रीमती दमयन्ती जोशी, श्रीमती रोशन कुमारी जैसे अनेक विद्वानों के साथ तबलावादन किया। सन १९४५-१९९५ इस कालावधी में उन्होंने अपने युग के अधिकांश प्रमुख संगीत सम्मेलनों में कई भारतीय शास्त्रीय संगीत के दिग्गजों और नर्तकियों के तबला संगतकार के रूप में भाग लिया था। बायाँ पर उनके हाथ की गतिमानता और नजाकत अविश्वसनीय थी। वे सांस्कृतिक मंडल के साथ रशिया गए थे, तभी उनके बायाँ के नाद से लोग इतने चकित हुए थे कि इस ध्वनि निर्माण करने के लिए बायें के अंदर कबूतर छिपाया हुआ है, ऐसा आभास लोगों को हुआ था। उनकी हाथ की तैयारी एवं शुद्धता अति उत्कृष्ट थी।

पं. सुधीरकुमार सक्सेनाजी ने तबले के प्रचार के लिए विभिन्न माध्यमों का चयन किया। इनमें रेडिओ सबसे प्रमुख था। आज भी उनके तबले का रिकॉर्डिंग गुजरात राज्य के सभी रेडिओ स्टेशनों पर प्रसारित किया जाता है। रेडिओ पर उन्होंने कई एकल प्रदर्शन और विभिन्न संगीत कार्यक्रमों की साथसंगत की है। उनके एकल तबले के प्रदर्शन अभी भी दूरदर्शन के कार्यक्रमों में प्रसारित किए जाते हैं। विभिन्न संगठनों की कई पत्रिकाओं में तबले पर उनके लेख प्रकाशित हुए हैं। तबला वादन का विकास और संवर्धन के कार्य में उनके मूल्यवान योगदान के लिए विभिन्न संगठनों ने उन्हें सम्मानित किया है। सन १९६२ में अफगाणिस्तान, रशिया, जॉर्जिया में हुए भारत उत्सव में उन्होंने भारत का प्रतिनिधित्व किया था। सन १९८३ में गुजरात राज्य का गौरव पुरस्कार, सन १९९० में मुम्बई की स्वर साधना समिति से ‘स्वर साधना रत्न’, सन १९९२ में मुम्बई के सुरसिंगार संसद से शारंगदेव पुरस्कार जैसे कई सम्मान उन्हें प्राप्त हैं।

प्रो. सुधीरकुमार सक्सेनाजी कहते थे कि हर एक तबलावादक को अच्छे गुरू से तालीम लेना आनिवार्य है। जो भी उनके पास सीखना चाहता था, उसे सिखाने से वे कभी इन्कार नहीं किया करते थे। अनुभवी कलाकारों को पढाने के साथ-साथ नये नये सीखनेवाले शुरूआती विद्यार्थियों को

भी वे सिखाया करते थे। उनकी किताब 'द आर्ट ऑफ तबला रिदम - इसेन्शियल्स, ट्रॅडिशन ॲन्ड क्रिएटिव्हिटी' तबला पर लिखी गई सबसे अच्छी किताबों में से एक है, जो भारतीय शास्त्रीय संगीत की सुंदर परम्पराओं का महत्त्व समझाती है।

गुजरात राज्य के 'दि महाराजा सयाजीराव युनिवार्सिटी बडोदा' का तबला विभाग प्रमुख पद संभालते समय उन्होंने देश-विदेश से आनेवाले अनेक शिष्यों को तबलावादन का प्रशिक्षण देकर तैयार किया। उनमें से कई शिष्य राज्य स्तर, राष्ट्रीय स्तर तथा आंतरराष्ट्रीय स्तर पर अजराड़ा घराने की झांकि का प्रदर्शन कर रहे हैं एवं कई शिष्य देश-विदेश के विभिन्न शैक्षणिक संस्थाओं तथा विश्वविद्यालयों के तबला विभाग में विभिन्न शैक्षिक कार्यों से जुड़े हैं। इनके शिष्यों में मुख्यत: श्री. गणपतराव घोडके, श्री. मधुकर गुरव, श्री. पुष्कर राज श्रीधर, श्री. रवींद्र निकते, श्री. चंद्रकांत भोसले, श्री. विक्रम पाटील, श्री. चंद्रशेखर पेंडसे, श्री. कालूराम भंवरिया, डॉ. अनिल गांधी, डॉ. अजय अष्टपुत्रे, डॉ. गौरांग भावसार, श्री. चिंतन पटेल, श्री राजू जोशी, डॉ. केदार मुकादम, श्री. नंदकिशोर दाते, श्री दिव्यांग वकिल, श्री रमेश बापोदरा, श्री. देवेंद्र दवे उल्लेखनीय हैं। मॉरीशस, श्रीलंका, नेपाल, बांगला देश से भी कई छात्रों ने उनसे सीखा है। इनमें मॉरीशस के श्री. दारापुल देवनंदन, जापान के श्री. काजुयुकी, लंदन के श्री. जॉन, श्री. अल्ताफ, बांगलादेश के हुसेन और श्री नितिरंजन आदि अनेक शिष्यों का समावेश है।

३० नवंबर, २००७ को अजराड़ा घराने के इस तबला महर्षि परम वंदनीय प्रो. सुधीरकुमार सक्सेना जी को देवाज्ञा हुई।

५.६.१ गत रचना - प्रो. सुधीरकुमार सक्सेना डॉ. अजय अष्टपुत्रेजी से प्राप्त

कऽत्तधिकिट x	कतगदिगन	धात्रकधिकिट	कतगदिगन ।
नगनगनग २	नगतिरकिट	धात्रकधिकिट	कतगदिगन ।
धिनतकधिन ०	तकधिनतक	धात्रकधिकिट	कतगदिगन ।
कऽत्तधिकिट ३	कतगदिगन	धात्रकधिकिट	कतगदिगन । धा x

तिस्त्र जाति की इस गत में हर एक पंक्ति के अन्त में 'धात्रकधिकिट कतगदिगन' है, जिसमें यमक मिलता है। प्रथम और अन्तिम पंक्ति समान है, इसलिए ये दोमुखी गत है। पाँचवीं मात्रा पर 'नगनगनग' ये दोनों हाथों से दायें पर बजनेवाला बोल नाजूकता की अनुभूति देता है। नवीं एवं दसवीं मात्रा पर रचाएँ गए 'धिनतकधिन तकधिनतक' बोल, इस रचना का अलग-सा रूप दिखाता है।

५.७ उ. बख्शू खाँसाहब (लखनऊ घराना)

दिल्ली के उ. सिद्धारखा ढाढी तबले के विकास में मील का पत्थर माने गए है। इनके तीन पुत्र थे - उ. घसीट खाँ, उ. बुगरा खाँ और तीसरे का नाम इतिहास की गर्भ में खो गया है। ये तीसरे अज्ञात पुत्र अपने तीन यशस्वी पुत्रों के कारण महत्त्वपूर्ण है, जिनके नाम हैं - उ. मक्कू खाँ, उ. मोदू खाँ एवं उ. बख्शू खाँ।

उ. बख्शू खाँसाहब के जन्म-मृत्यु की तिथियाँ ज्ञात नहीं हैं। उ. बख्शू खाँसाहब अपने भाई उ. मोदू खाँसाहब से उम्र में काफी छोटे थे और अभिमानी एवं कठोर स्वभाव के व्यक्ति थे। वे तबला बहुत अच्छा बजाते थे। उनको तबले के लखनऊ (पूरब) घराने के संस्थापक होने का सम्मान प्राप्त है।

तबले के लखनऊ घराने की प्रगति के पीछे लखनऊ के कलाप्रेमी नवाबों का विशेष सहयोग रहा है। नवाब आसफ उद्दौला के शासन काल में उ. मोदू खाँसाहब और उनके कुछ वर्ष पश्चात् उनके अनुज उ. बख्शू खाँसाहब लखनऊ आ गए। उन दिनों लखनऊ में संगीत का उच्चस्तरीय वातावरण था। पखावज़ वाद्य का अधिक प्रचलन था। नवाब वाजिद अली शाह के दरबार में कथ्थक नृत्यकारों एवं तबले के विद्वानों एवं कलाकारों का भी आदर-सम्मान होता था। नवाब साहब को तबले के प्रति काफी रूचि थी। इन कलाप्रेमी नवाबों की छत्र छाया में तबले का लखनऊ घराना विकसित हुआ।

उ. बख्शू खाँसाहब अत्यन्त अभ्यासी, रियाज़ी, मीठा तबला बजाने में प्रसिद्ध एवं अद्‌भूत रचनाकार थे। उनके पास पखावज़ और दिल्ली घराने की वादनशैली का भंडार तो पहले से ही था। लखनऊ आने के बाद उन्होंने तबले में चरम उन्नति की। अपनी उस कला पर पूर्वी रंग चढ़ा कर

लखनऊ को एक घराने के रूप में मान्यता दिलाई। दिल्ली घराने से अलग ऐसी पूरब वादनपद्धति के निर्मिति का श्रेय उ. बख्शू खाँसाहब को है। उ. बख्शू खाँसाहब को नई-नई रचनाएँ करने का शौक था। उनकी रचनाएँ अत्यंत आकर्षक, सौंदर्यपूर्ण, दायाँ-बायाँ के विविध स्थानों पर निकलनेवाली, नादों को महत्त्व देनेवाली ऐसी हैं। उनकी रचनाएँ दायें-बायें के सुन्दर संयोग का उत्तम नमुना है।

उ. बख्शू खाँ के पुत्र उ. मम्मन खाँ उर्फ उ. मम्मू खाँ बाद में लखनऊ घराने के खलीफा माने गए। तबले में 'धिरकिट' की निकास स्याही से सरका कर पूरे पंजे से बजाने का प्रचलन उन्होंने आरम्भ किया। उ. बख्शू खाँ के दूसरे पुत्र उ. सलारी खाँसाहब 'गत' वादन में प्रवीण थे। उ. बख्शू खाँ ने अपनी कन्या मोतीबीबी को अपनी तबले की विद्या से परिचित कराया था और उसका विवाह अपने शागिर्द फर्रुखाबाद के उ. विलायत अली खाँ, जो अपने युग के उत्कृष्ट तबला वादक थे, उन्हींसे करा दिया। उन्होंने अपने दामाद उ. विलायत अली खाँ को दहेज में अनेक बन्दिशें भेट दे दीं। उ. बख्शू खाँसाहब के शिष्य बेचाराम चटोपाध्याय ने अपने मूल स्थान विष्णुपुर लौटकर लखनऊ बाज का प्रचार किया।

५.७.१ "गत ताल - त्रिताल रचना - उ. बख्शू खाँसाहब

धगेऽत	किटधागे	तिटगेन	घिड़नग ।
x			
तकिटधा	त्रकगेन	घेनकति	टतगेन ।
२			
ऽघिनक	धा	ऽधिं	धिंधा ।
०			
धातिऽधा	त्रकधागे	घिनकति	टतगेन ।
३			
ताकेऽत	किटताके	तिटकेन	किड़नक ।
x			
तकिटता	त्रकतेन	केनकति	टतकेन ।
२			
ऽघिनक	धा	ऽधिं	धिंधा ।
०			
धातिऽधा	त्रकधागे	घिनकति	टतगेन । धा" ८
३			x

प्रस्तुत गत चतस्त्र जाति में निबद्ध खाली-भरी की सरल गत है। इसमें ‘ऽघिनक धा ऽधिं धिंधा’ यह बोलपंक्ति से गत में नज़ाकत पैदा हुई है।

५.८ उ. मोदू खाँसाहब (लखनऊ घराना)

उ. सिद्धारखाँ के पौत्र उ. मोदू खाँसाहब के जन्म-मृत्यु की तारीख उपलब्ध नहीं है। जिन दिनों लखनऊ की गद्दी पर नवाब आसुफुद्दौला आसीन थे, उ. मोदू खाँ और उनके पश्चात् उनके अनुज उ. बख्शू खाँ अपना वतन छोड़कर दिल्ली से लखनऊ आकर बस गए। लखनऊ के चौक स्थित लाल हवेली की कोठी नवाब साहब ने उ. मोदू खाँ को उपहार स्वरूप दी थी।

इस काल में लखनऊ में कथ्थक नृत्य का जोरदार प्रचार एवं प्रसार था। कथ्थक की संगति के लिए तबले का दिल्ली बाज़ अधिक नाजूक होने के कारण पूरी तरह उपयुक्त नहीं था। इसी कारण इन बंधुद्वयों ने तबले में पखावज़ शैली के आधार पर काफी परिवर्तन किए। अपनी नयी वादनशैली में उन्होंने चाटी से अधिक लव, स्याही का प्रयोग किया। दो उँगलियों के स्थान पर सभी उँगलियों को महत्त्व दिया। बोलों के निकास में परिवर्तन किए। गतपरन, टुकड़े, चक्रदार आदि जो चीजें तबला एवं पखावज़ दोनों में से थी, उनका तबले के साहित्य में समावेश करके एक स्वतंत्र बाज निर्माण किया। लखनऊ रह कर उन्होंने तबले की परम्परा को उत्तर भारत में फैलाया और लखनऊ घराने की स्थापना की। इस प्रकार देश के पूर्वी भाग में लखनऊ घराना और पूरब बाज अस्तित्व में आए। उ. मोदू खाँ एवं उनके बंधू उ. बख्शू खाँ इन्होंने नई-नई रचनाएँ निर्माण कर लखनऊ घराने को समृद्ध बना दिया।

तबले के लखनऊ घराने की परम्परा में उ. मोदू खाँ का नाम अमर है। उ. मोदू खाँ एक अच्छे रचनाकार और सहृदय गुरू थे। उनके पुत्र जाहिद खाँ अच्छे कलाकार थे। उ. मोदू खाँ के शिष्यों में दूसरा नाम उनके भतीजे उ. मम्मन खाँ उर्फ मम्मू खाँ का आता है। उ. मम्मन खाँ उर्फ उ. मम्मू खाँ अपने चाचा उ. मोदू खाँ से बहुत प्रभावित थे। अत: अपने पिता उ. बख्शू खाँ के होते हुए भी उनकी अधिकतर शिक्षा अपने चाचा उ. मोदू खाँ से सम्पन्न हुई थी। उ. मोदू खाँ के प्रमुख शिष्यों में

वाराणसी के पं. रामसहाय मिश्र का नाम विशेष उल्लेखनीय है। सरस एवं उदार हृदय के उस्तादजी के यश की पताका को पं. रामसहायजी ने फहराया। खाँसाहब ने पंडितजी को बारह वर्षों तक अपने घर में रख कर शिक्षा दी। उ. मोदू खाँ एवं उनकी पत्नी उन्हें पुत्रवत प्रेम करते थे। ऐसा प्रचलित है कि उ. मोदू खाँ की पत्नी पंजाब के किसी बड़े उस्ताद की पुत्री थी एवं तबले की अच्छी जानकार भी थी। वे उस्ताद की अनुपस्थिति में रामसहायजी को तबला सिखाया करती थी। उ. मोदू खाँसाहब से और भी कई शिष्यों ने तालीम प्राप्त की थी।

५.८.१ ''गत ताल - त्रिताल रचना - उ. मोदू खाँसाहब

धाऽऽत	किटधिंन	केतकगे	तकधिंन ।
x			
तकिटत	किटधेत्	धागेत्रक	तिंनाकता ।
२			
तातिंनाना	तिंनानाऽ	तिरकिट तिंना	किड़नग ।
०			
तकिटधा	तिंना किटतक	धाऽधाऽ	धिरधिरकत् । धा'' ९
३			x

प्रस्तुत गत चतस्त्र जाति की सीधी गत है। इसमें समा यति है। अन्तिम दो मात्राओं में 'धाऽधाऽ धिरधिरकत्' यह अलग ढंग के बोलों से जोरदार सम पर आती है।

५.९ उ. मिया तिलंगा (लखनऊ घराना)

उ. मिया तिलंगा की एक मनोरंजक कथा है। १८१७ से १८२० की कालावधी के दौरान लखनऊ घराने के संस्थापक उ. हुसेन बख्श उर्फ उ. बख्शू खाँ, नेपाल दरबार के राजे राणा जंग बहादूर के दरबारी वादक नियुक्त हुए थे। उधर उ. बख्शू खाँ कुछ शागिर्दों को तबला सिखा करते थे। एक दिन सुबह एक छ: फूट का मजबूत बंदूकधारी सैनिक उनके पास आया और उसने खाँसाहब को पूछा, ''क्या आप मुझे तबला सिखाओगे?'' उसका आपादमस्तक निरीक्षण कर उ. बख्शू खाँ मजाक में बोले, ''इतनी बड़ी और मोटी उँगलिओं से तबला कैसे बजाओगे? उन्हें छीलकर

आना।'' लेकिन वास्तव में ये फौजी दोनों हाथ की उँगलियों को आगे से छील कर खून बहती हुई अवस्था में आधा-पाऊना घंटा के बाद उनके पास आया। उसकी ये अवस्था देख कर उ. बख्शू खाँ बोले, ''अरे पगले, यह क्या किया? मैंने तो मज़ाक किया था।'' बाद में वैद्य से देसी दवा लेकर उनके हाथ ठीक हो गए। तबले के प्रति तथा गुरू के प्रति उसकी निष्ठा देख कर उ. बख्शू खाँ ने उसे दिल से सिखाया। इसी जवान का नाम 'मियाँ तिलंगा'। यह 'मियाँ तिलंगा' बाद में 'फौजी' नाम से पहचाने जाने लगे। इन्होंने बहुत सारी रचनाएँ की, जो 'तिलंगाबादी गतें' इस नाम से प्रसिद्ध हैं।

५.९.१ ''गत ताल - त्रिताल रचना - उ. मियाँ तिलंगा

धाऽतिटघिड x	नगतिंगनग	ऽघिड	नगतिंगनग ।
धाऽति २	टघिड	नगतिं	गनग ।
तिटघि ०	डनग	तिंगन	गनग ।
धाऽतिटघिड ३	नगतिंगनग	तिटघिडनग	तिंगनगनग । धा'' १० x

प्रस्तुत गत तिस्त्र जाति में बाँधी गयी सुंदर रचना है। ३ एवं ५ से १२ मात्राओं पर प्रत्येकी तीन अक्षरों की एवं बाकी मात्राओं पर दुगुनी अक्षर संख्या की योजना की गई है।

५.१० उ. मुहम्मद खाँसाहब (लखनऊ घराना)

तबला-वादन के लिए प्रसिद्ध लखनऊ घराने की स्थापना का श्रेय उ. मोदू खाँ एवं उ. बख्शू खाँ इन भाईयों को जाता है। यह दोनों अपनी कला में पारंगत थे और एक दूसरे से बढ़-चढ़कर थे। इनमें से उ. बख्शू खाँ के एक पुत्र उ. मम्मन खाँ उर्फ उ. मम्मू खाँ अपने युग के सर्वश्रेष्ठ प्रतिनिधि माने गए और खलीफा के सम्मानजनक शब्द से सम्बोधित किए गए। इन्ही उ. मम्मु खाँसाहब के यशस्वी सुपुत्र उ. मुहम्मद खाँसाहब। इन्होंने अपनी पिता से तालीम लेकर पिता से प्राप्त ज्ञानभांडार

में अपनी खुद की कई रचनाओं के योग से लखनऊ घराने का घरंदाज वादन का खजाना अपने वंशजों के लिए समृद्ध कर दिया।

उ. मुहम्मद खाँसाहब के दो पुत्र थे - ज्येष्ठ पुत्र उ. बडे मुन्ने खाँ एवं छोटे पुत्र उ. आबिद हुसेन खाँ। इन दोनों की आयु में काफी अंतर था। उ. मुहम्मद खाँसाहब ने अपने ज्येष्ठ पुत्र उ. बडे मुन्ने खाँ को अच्छी तालीम देकर उत्तम तैयार किया। उसकी तुलना में वे अपने कनिष्ठ पुत्र उ. आबिद हुसेन खाँ को असामायिक मृत्यु हो जाने के कारण अधिक शिक्षा नहीं दे पाए। अत: उ. बडे मुन्ने खाँ ने अपने छोटे भाई की शिक्षा का उत्तरदायित्व स्वीकार किया और बारह वर्ष शिक्षा देकर उन्हें कला में पारंगत किया। उ. मुहम्मद खाँसाहब के जन्म-मृत्यु की तिथियाँ उपलब्ध नहीं हैं। परन्तु उनके कनिष्ठ पुत्र उ. आबिद हुसेन खाँ का जन्म सन १८६७ को लखनऊ में हुआ था। इसके आधार पर उ. मुहम्मद खाँसाहब का जन्म सम्भवत: सन १८२५-१८३० के दरमियान हुआ होगा ऐसा माना जाता है।

५.१०.१ ‘‘**गतटुकड़ा** ताल-त्रिताल रचना - उ. मुहम्मद खाँसाहब

धिटतिट x	धागेतिट	क्डधातिट	धागेतिट ।
धिटतिट २	क्डधातिट	क्डधातिट	धागेतिट ।
तिटतत ०	गेनधिट	तगेनधि	टतगेन ।
कतिटत ३	गेनधिट	तगेनधि	टतगेन ।
धेत् तगे x	ऽन्नधेत्	तगेन्त	गेन्तगेन् ।
धाऽऽ २	ऽऽत्रक	धेत् तगे	ऽन्नधेत् ।
तगेन्त् ०	गेन्त्गेन्	धाऽऽ	ऽऽत्रक ।
धेत् तगे ३	ऽन्नधेत्	तगेन्	गेन्तगेन्। धा’’ ११ x

यह रचना सरल सीधी होते हुए भी इसका तिहाई तक का भाग चतस्त्र जाति में एवं संपूर्ण तिहाई तिस्त्र जाति में होने के कारण आकर्षक हुई है।

५.११ उ. आबिद हुसेन खाँसाहब (लखनऊ घराना)

उ. आबिद हुसेन खाँसाहब का जन्म १८६७ में लखनऊ के महमूद गंज नामक मोहल्ले में हुआ था। उनके पिता उ. मोहम्मद खाँ एक ख्याति प्राप्त प्रतिष्ठित कलाकार थे और लखनऊ के अन्तिम नवाब वाजिद अली शाह के शासनकाल में दरबार के प्रतिष्ठित कलाकारों में से थे। सात वर्ष की उमर से अपने पिता उ. मोहम्मद खाँसाहब के पास उ. आबिद हुसेन खाँ की प्रारम्भिक शिक्षा हुई थी। बाद में उन्होंने अपने बड़े भाई उ. बड़े मुन्ने खाँसाहब से कई साल तबले की तालीम ली थी।

उस्ताद आबिद हुसेन खाँसाहब बड़े विद्वान, परिश्रमी तथा प्रतिभासम्पन्न कलाकार थे। उनका हाथ इतना साफ और मधुर था कि सुननेवाले उनके वादन से मोहित हो जाते थे। लाल किला गत की रचना उनकी देन है। निरन्तर अभ्यास द्वारा अपने वादन में चमत्कार पैदा कर वे खलीफा पद से सम्बोधित किए गए थे। इनका तबला वादन अत्यन्त मिठासपूर्ण, सुस्पष्ट और प्रभावशाली था। खूब रियाज़, बुद्धिमत्ता, प्रतिभा, सुंदर जानकारी, उत्तम मांडणी, सुस्पष्ट एवं जोरदार बोल आदि के कारण लखनऊ का तबला उनके हाथ से सुनने में एक अवर्णनीय आनंद मिलता था। लखनऊ घराने का असली बाज उनके हाथों में था। उन्होंने लखनऊ के प्रसिद्ध नृत्यकार ठाकूर प्रसादजी के घराने के नर्तकों के साथ नृत्य की संगत करके 'नचकरन' में निपुणता प्राप्त कर ली थी।

उ. आबिद हुसेन खाँसाहब ने लखनऊ के 'मोरिस म्युजिक कालेज़' वर्तमान नाम 'भातखण्डे हिन्दुस्तानी संगीत विश्वविद्यालय, लखनऊ' में विद्यादान किया, जिधर वे सात अध्यापकों के प्रथम बैच में से एक थे। उन्होंने बहुत सी रचनाएँ भी की थीं, जो आज भी उनके वंशजों के पास सुरक्षित हैं।

अपने वैशिष्ट्यपूर्ण तबालावादन के साथ सीखाने के तकनीक में भी उनकी निपुणता थी। उन्होंने कई उत्तम शिष्य तैयार किए। उनके शिष्योंत्तमों में उनके भतीजे और दामाद उ. वाजिद हुसेन खाँ, इंदौर के उ. जहांगीर खाँ, बनारस के पं. बीरू मिश्र, कलकत्ता के हीरेन्द्रकुमार गांगुली उल्लेखनीय थे।

खलिफा उ. आबिद हुसेन खाँ का देहान्त जून १९३६ को लखनऊ में हुआ।

५.११.१ ''**गतटुकड़ा** ताल-एकताल रचना - उ. आबिद हुसैन खाँसाहब

धेत्धेत्	त्रकधेत् ।	धागेतिट	तागेतिट ।
x		०	
क्डधेत्दिं	गननागे ।	तिरकिटतकताऽ	केऽतिरकिटतक ।
२		०	
तकिटधा	त्रकधिट ।	तताघेघे	तिटघेघे ।
३		४	
नानाकत्	ऽत्तधा ।	ऽकत्त	धाऽनाति ।
x		०	
कत्नातिं	कत्तिट ।	धाऽनातिं	कत्नातिं ।
२		०	
कत्तिट	धाऽनतिं ।	कत्नातिं	कत्तिट । धीं'' १२
३		४	x

यह चतस्त्र जाति की रचना उ. आबिद हुसेन खाँसाहब की प्रतिभा एवं कल्पनाशक्ति की झलक दिखाती है। १ से ४ मात्रा तक सरल रचना है। पाँचवीं मात्रा से अन्तिम मात्रा तक सुंदर आन्दोलन मिलता हैं। अक्षरों की विविधता से युक्त आसान एवं अच्छी रचना है।

५.१२ उ. बड़े मुन्ने खाँसाहब (लखनऊ घराना)

उ. बड़े मुन्ने खाँसाहब लखनऊ घराने के एक स्तम्भ माने जाते थे। उनके जन्म-मृत्यु की तिथियों की जानकारी नहीं है। वे उ. मम्मू खाँसाहब के पौत्र, उ. मुहम्मद खाँसाहब के ज्येष्ठ पुत्र एवं उ. आबिद हुसेन खाँसाहब के बड़े भाई थे। उ. आबिद हुसेन खाँसाहब का जन्म १८६७ में हुआ था।

दोनों भाईयों की आयु में काफी अंतर था। अत: अनुमान किया जाता है कि उनका जन्म सन १८५०-१८५५ के दरमियान हुआ होगा।

उ. बड़े मुन्ने खाँसाहब नृत्य की संगति में अद्वितीय थे। वे नवाब वाजिद अली शाह के दरबार के कला रत्न थे। ''मोहम्मद करम इमाम लिखते हैं कि महाराजा कालकाबिन्दा के नृत्य के साथ लखनऊ दरबार में बख्शू खाँ के प्रपौत्र उ. मुन्ने खाँ संगति किया करता था।''[१३] अपने पिताजी उ. मुहम्मद खाँ के मृत्यु के बाद उन्होंने खुद रचना करने में ध्यान दिया। इनकी रचनाओं में मौलिकता के साथ-साथ फर्रुखाबाद के ख्यातनाम उ. हाजी विलायत अली खाँ की रचनाओं का बड़ा प्रभाव (असर) दिखाई देता है। उ. बड़े मुन्ने खाँ की रचनाएँ लखनऊ एवं फर्रुखाबाद इन दो घरानों के संमिश्र प्रभाव से हुई है, जो अत्यन्त प्रगल्भ है।

उ. बडे मुन्ने खाँ उत्कृष्ट वादक, रचनाकार एवं सफल गुरू थे। उन्होंने अपने पिताजी उ. मुहम्मद खाँ के मृत्यु के बाद छोटे भाई उ. आबिद हुसेन खाँसाहब को बारह वर्ष तालीम देकर उन्हें कला में पारंगत किया, परन्तु उन्हें अपने छोटे भाई जैसी ख्याति नहीं मिली। उ. मुनीर खाँ, उ. अमीर हुसेन खाँ, उ. अहमदजान थिरकवाँ आदि ने अपने वादन में उनकी रचनाओं का समावेश करके उनका नाम अजरामर किया। उ. बडे मुन्ने खाँसाहब के पुत्र उ. बहादुर हुसेन खाँ, उ. नायाब हुसेन खाँ, पौत्र उ. इनायत हुसेन खाँ, उ. रजा हुसेन खाँ एवं नाती उ. सुलतान हुसेन खाँ आदि तबले के जानकार थे।

५.१२.१ गत ताल - त्रिताल रचना - उ. बडे मुन्ने खाँसाहब

गुरुवर्य पं. नारायण जोशीजी से प्राप्त

धाऽक्डधा	ऽनधाधा	क्डधाऽधा	घिडनगतिंगनग ।
x			
तिरकिटतकताऽ	तिरकिटधाऽतिर	घिडनगतिरकिट	तकताऽतिरकिट ।
२			
घिंतराऽनति	टघिंतिट	घिडनगतिंगनग	ताऽतिरकिटतक ।
०			

ताऽतिरकिटधीर धीरधीरकिटतक धीरधीरकिटतक तागेतिटकिडाऽन। धा
३ x

प्रस्तुत गत फर्रुखाबादी छाप की सीधी गत है। ये गत ठाय-दून में बजती है। अक्षरों के स्पष्ट निकास से बजायी गई, तो अत्यंत आकर्षक रूप में सम पर आती है।

५.१३ उ. वाजिद हुसेन खाँसाहब (लखनऊ घराना)

तबला वादन की कला दिल्ली के बाद सर्वप्रथम लखनऊ में उ. मोदू खाँ, उ. बख्शू खाँ और उ. मक्कू खाँ द्वारा आई। उन्हीं के समकालीन उ. मुहम्मद खाँ हुए। उन्हीं के पौत्र और उ. बड़े मुन्ने खाँ के सुपुत्र उ. वाजिद हुसेन खाँ का जन्म सन १९०६ को लखनऊ में हुआ। आठ वर्ष की आयु से उनकी तबला वादन की शिक्षा अपने पिता उ. बड़े मुन्ने खाँसाहब एवं चाचा खलीफा उ. आबिद हुसेन खाँसाहब के पास हुई। बाद में उ. आबिद हुसेन खाँसाहब की बेटी से उनका विवाह हुआ। इस प्रकार उ. वाजिद हुसेन खाँसाहब उ. आबिद हुसेन खाँसाहब के शागिर्द, भतीजे एवं दामाद थे।

आठ घंटे का नियमित अभ्यास करके उ. वाजिद हुसेन खाँसाहब ने तबले पर अच्छा अधिकार प्राप्त कर लिया था। तबले की उच्च शिक्षा के दौरान उनके आकाशवाणी लखनऊ से भी सम्बन्ध रहे और लगातार उनके कार्यक्रम प्रसारित होते रहे। लखनऊ घराने के कायदे, परन, गत और रेला वे बड़े अधिकार से बजाया करते थे। खलिफा उ. वाजिद हुसेन खाँसाहब का वादन अत्यन्त आकर्षक था। दायाँ-बायाँ का योग्य समतोल, वजन एवं तैयारी ये इनके वादन की विशेषताएँ थीं। विविध गतपरनें दुगुन में बजाते समय कई बार वे उनकी रौ बनाकर बजाया करते थे। रेलें, गतें, गतपरनें, तिहाई, चक्रदार आदि का उपयोग उनके वादन में अधिक होता था। संगीत नाटक अकादमी, दिल्ली में उनके वादन का ध्वनिमुद्रण उपलब्ध है। जीवन के आठवें दशक में भी जब वे तबला लेकर बैठते थे, तो उनमें युवकों जैसी स्फूर्ति आ जाती थी।

उ. वाजिद हुसेन खाँसाहब अत्यन्त सरल स्वभाव के और मृदु-भाषी व्यक्ति थे। देश के अतिरिक्त उन्होंने काबुल की भी सांगीतिक यात्रा की थी। उनके पुत्र उ. आफाक हुसेन खाँसाहब ने खूब यश अर्जित किया।

उ. वाजिद हुसेन खाँ की मृत्यु २४ मई, १९७८ को लखनऊ में हुई।

५.१३.१ ''गत ताल - त्रिताल उ. वाजिद हुसेन खाँसाहब के वादन में प्रयुक्त

धाघिडनगतेत्	ऽधाऽघिडनग	तेत्घिडनग	तिंन्ना किडनग ।
x			
तेत्घिडनग	तिंगनग तेत्	तेत्घिडनग	तिंन्ना किडनग ।
२			
ततत्ता	किडनगतेत्	ताऽतिरकिटतक	ताऽतिरकिटतक ।
०			
तकतिटघिडनग	धिनतकतकतिट	घिडनगधिनतक	तकतिटघिडनग । धा'' १४
३			x

यह छोटी गत बजाने के लिए अत्यन्त आकर्षक है। उ. वाजिद हुसेन खाँसाहब ने ये गत दुगुन में वैसी की वैसी रवनिर्मिति के बिना बजायी है। यह चतस्त्र जाति में निबद्ध सरल गत है। 'घिडनग', 'तिंगनग', 'तेत्' इन बोलों को महत्त्व देकर गत की रचना हुई है, इसलिए सरल होते हुए भी यह गत सौंदर्यपूर्ण लगती है।

५.१४ उ. अफाक हुसेन खाँसाहब (लखनऊ घराना)

उ. अफाक हुसेन खाँसाहब का जन्म १२ जुलाई, १९३० को लखनऊ के प्रतिष्ठित संगीतज्ञ परिवार में हुआ था। उन्हें उमर के चौथे बरस से अपने दादाजी खलीफा उ. आबिद हुसेन खाँसाहब से तबला वादन की शिक्षा प्राप्त हुई थी। सन १९३६ में दादाजी के मृत्यु के बाद अपनी माँ काझ्मी बेगम (उ. आबिद हुसेन खाँसाहब की पुत्री) एवं पिता उ. वाजिद हुसेन खाँ (उ. आबिद हुसेन खाँसाहब के भतीजे) इन्हीं से उनकी तबलावादन की तालीम हुई थी।

उ. अफाक हुसेन खाँसाहब ने अपने सांगीतिक जीवन का प्रारम्भ १९४५ से किया था। वे हमेशा ही उ. बड़े गुलाम अली खाँ, उ. अमीर खाँ जैसे भारत के सभी बुजुर्ग कलाकारों की अच्छी तबला संगत करते थे। देश का शायद ही कोई प्रतिष्ठित संगीतज्ञ बचा हो, जिसके साथ खाँसाहब ने सफल संगति न की हो। नृत्य की साथ संगत करना तो उनको अपने परिवार से विरासत में मिला था। स्वतंत्र तबला-वादन में वे अपने घराने की परम्पराओं का कुशलतापूर्वक निर्वाह करते थे। उ. अफाक हुसेन खाँसाहब लखनऊ घराने का शुद्ध तबला बजाते थे। इनके वादन में मधुरता, बोलों की स्पष्टता, तैयारी एवं इनके घराने की विशेषताएँ स्पष्ट रूप से दृष्टिगत होती थी। इसका अनुभव उनके तबले की उपलब्ध ध्वनिमुद्रण सुनकर होता है। संक्षेप में वे लखनऊ घराने के साक्षात् प्रतिनिधि थे।

कलकत्ता में संगीत का अच्छा वातावरण होने के कारण युवावस्था में ही वे लखनऊ छोड़ कर कलकत्ता गए थे। इन्होंने सन १९६२ में अफगाणिस्तान की सांगीतिक यात्रा की थी। सन १९७२ में आकाशवाणी के विभागीय कलाकार के रूप में वे वापस लखनऊ लौटे। एक वर्ष बाद सन १९७३ से १९७७ उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी द्वारा संचलित कथ्थक केन्द्र में वे नियुक्त हो गए थे। १९७७ में वे लखनऊ दूरदर्शन केन्द्र से जुड़ गए थे, जहाँ वे अन्त तक रहे। सन १९८५ में भारत सरकार की ओर से पॅरिस में आयोजित कार्यक्रम में भाग लिया था। सन १९८८ में स्टार युनिवर्सिटी के निमंत्रण पर वे पुन: फ्रान्स गए थे। सन १९८८ में उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी ने इन्हें अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया था।

मृदु, अन्तर्मुखी, अल्पभाषी उ. आफाक हुसेन खाँसाहब की सृजनात्मक क्षमता उनके वादन में झलकती थी। वे एक उदार गुरू भी थे। इनका शिष्य परिवार बड़ा था। उनके शिष्यों में उनके दो पुत्र उ. इलमास हुसेन और उ. इल्यास हुसेन, श्रीलंका के पी. बी. नन्दश्री, प्रवीर कुमार मित्र, भोपाल राय चौधरी, तिमिर राय चौधरी, पंकज चौधरी, विवेकानंद भट्टाचार्य, फ्रान्स के जेराल्ड खुर्जियान एवं इंग्लंड के डॉ. जिम किपेन ये नाम प्रमुख उल्लेखनीय है। अपने सरल व्यवहार से वे कलाकारों, संगीत-रसिकों एवं शिष्यों के बीच बहुत प्रिय थे।

उ. आफाक हुसेन खाँसाहब का देहांत १४ फरवरी, १९९० को लखनऊ में हुआ।

५.१४.१ ''गतटुकड़ा जाति - चतस्त्र

धागेतिट	तागेतिट	धागेदिंग्	नागेतिट ।
x			
क्डधातिट	धागेतिट	धागेदिंग्	नागेतिट ।
२			
क्डधातिट	क्डधातिट	क्डधातिट	धागेतिट ।
०			
क्डधातिट	धागेतिट	धागेदिंग्	नागेतिट ।
३			
घेधेत्ता	ऽनधेत्	ताऽधिरधिर	किटतकताऽतिर ।
x			
किटतकताऽतिर	किटतक	क्डाँ	ऽधाऽ ।
२			
ऽधिरधिर	किटतकतकट	धाऽ	ऽता ।
०			
धाऽ	धिरधिरकिटतक	ताऽतिरकिटतक	ताऽतिरकिटतक ।
३			
तक्डाँ	ऽधाऽ	ऽधिरधिर	किटतकतकट ।
x			
धाऽ	ऽता	धाऽ	धिरधिरकिटतक ।
२			
ताऽतिरकिटतक	ताऽतिरकिटतक	तक्डाँ	ऽधाऽ ।
०			
ऽधिर्धिर्	किटतकतकट	धाऽ	ऽता । धा'' १५
३			x

उपरोक्त बन्दिश चतस्त्र जाति में निबद्ध है। इसमें 'धागेतिट', 'तागेतिट' इत्यादि पखावज़ अंग के बोल हैं। ये बोल बराबरी की लय एवं आघातों की विशेषताओं के कारण जोरदार बजते हैं। 'धिरधिरकिटतक ताऽतिरकिटतक' ये कम मात्रा में अधिक अक्षरों के बोलसमूहों का प्रयोग तिहाई में

किया है, जो रचना में गतिमानता लाकर सम पे जोरदार आता है। इससे रचना ज़्यादा असरदार होती है।

५.१५ उ. हाजी विलायत अली खाँसाहब (फर्रुखाबाद घराना)

फर्रुखाबाद घराने के संस्थापक उ. विलायत अली खाँ 'उस्ताद हाजी विलायत अली खाँ' के नाम से संगीत जगत् में विख्यात है। उनके जन्म-मृत्यु की तिथियाँ तथा उनके तबलावादन की प्रारम्भिक शिक्षा सम्बन्धी जानकारी उपलब्ध नहीं हैं। वे प्रसिद्ध गायक बंधुद्वय उ. हद्दू खाँ और उ. हस्सू खाँ के पिता उ. कादिर बख्श खाँ के समकालीन माने जाते हैं।

उन्होंने लखनौ घराने के उ. बख्शू खाँ से दीर्घ समय तक विधिवत् शिक्षा प्राप्त की। बाद में उ. बख्शू खाँ ने अपनी पुत्री मोतीबीबी का विवाह हाजीसाहब से कराया। दहेज में अनेक बहुमूल्य बन्दिशें भेट की। उस्ताद बख्शू खाँ ने अपनी पुत्री को तबला सिखाया था। हाजीसाहब, पत्नी के तबला ज्ञान से प्रभावित थे एवं पत्नी को गुरूस्थान में मानते थे। ससुर से तबले का ज्ञान संपादन करने के पश्चात् विवाहोपरान्त वे फर्रुखाबाद चले गए और तबले का खूब प्रचार किया। हाजीसाहब कलाकार के साथ-साथ एक अच्छे गुरू भी थे। उन्होंने उस युग में वहाँ तबले का एक विद्यालय स्थापित किया, जब विद्यालय की कल्पना भी नहीं की जाती थी। उनकी पत्नी से संचलित इस विद्यालय में उनके अनेक शिष्यों ने तबले की शिक्षा लेकर रियाझ किया। हाजीसाहब ने लखनौ घराने के वादनशैली में मौलिक परिवर्तन करके नये ढंग की अनेक रचनाएँ की, नये शैली को जन्म दिया और फर्रुखाबाद को एक घरानें की प्रतिष्ठा दिलाने में सफलता प्राप्त की।

हाजीसाहब लखनऊ में नवाब वाजिद अली शाह के दरबारी कलाकार थे। बाद में वे रामपूर रियासत के संगीत प्रेमी नवाब युसूफ अली खाँ के दरबार में कलाकार नियुक्त हो गये। वे अपने युग के एक उत्कृष्ट तबलावादक, विद्वान रचनाकार एवं कुशल गुरू थे। गुणिजनों का यह मत है कि ऐसा वादक और रचनाकार सदियों में ही पैदा होता है। उन्होंने लखनऊ घराने के बाज में परिवर्तन करके एक नये शैली को जन्म दिया। उन्होंने अपने वादन में चाटी और स्याही दोनों को समान महत्त्व दिया।

उनका वादन अत्यंत क्लिष्ट एवं लयकारी युक्त था। अपनी नयी शैली में अलग ढंग से गतों की रचना करके उन्होंने एक नये घरानें को जन्म दिया, जो फर्रुखाबाद घराने के नाम से आज सर्वत्र विख्यात है। उनकी जो गतें आज सुनने को मिलती हैं, वे रचना की दृष्टि से बहुत ही अप्रतिम हैं और आज के सभी तबलावादकों में लोकप्रिय हैं। उन्हें प्रस्तुत करने में आज के कलाकार गौरव का अनुभव करते हैं। हज की यात्रा करना उस समय आसान नहीं था। विलायत अली साहब सात बार हज करने गए और प्रत्येक बार अल्लाह से तबले की विद्या की दुआ माँगी एवं परवरदिगार से अपनी रचनाएँ खूब असरदार होने की प्रार्थना की। इन्हीं यात्राओं के बाद से वे 'हाजी' की सम्मानजनक उपाधि से पहचाने जाने लगे।

हकीम मोहम्मद करम इमाम के अनुसार ''हाजी विलायत अली गत वादन में कुशल थे। हज करने के पश्चात् उन्होंने महफिलों में बजाना छोड़ दिया था।'' १६

हाजीसाहब के ज्येष्ठ पुत्र उस्ताद निसार अली खाँ, दूसरे पुत्र उस्ताद अमान अली खाँ और तीसरे पुत्र उस्ताद हुसेन अली खाँ सभी तबले की कला में पारंगत थे। हाजीसाहब के गुरू भाई तथा साले उस्ताद सलारी खाँ को कुछ लोग उनका शिष्य भी मानते हैं। हाजीसाहब के शिष्यों में उस्ताद चुडियाँवाले इमाम बख्श, विष्णुपुर के बेचाराम चटोपाध्याय, पटना के उस्ताद मुबारक अली खाँ, उस्ताद थिरकवाँ खाँसाहब के नाना उस्ताद करम इत्तल खाँ और उस्ताद करम इत्तल खाँ के भाई उस्ताद इलाही बख्श इनका समावेश था। उत्तर भारत के काल्पी में हाजीसाहब की कब्र है।

५.१५.१ ''गत जाति चतस्त्र ताल-त्रिताल रचना - उ. हाजी विलायत अली खाँसाहब

धागऽत्त x	किटधाग	ऽत्तकिट	धा।
धडऽन्न २	किटतक	नगतिट	किडाऽन् ।
तिरकिटतकता ०	ऽतिरकिटतक	ताऽनधे	ऽत्‌धाऽघे ।
तिटकता ३	गदिगन	धिरधिरकिटतक	ताऽतिरकिटतक। धा'' १७ x

५.१६ उ. चुडियाँवाले इमाम बख्श खाँसाहब (फर्रुखाबाद घराना)

तबले की दुनिया में उ. चुडियाँवाले इमाम बख्श खाँसाहब एक ध्येयवादी, आदर्श एवं ख्यातनाम कलाकार थे। उनके जन्म मृत्यु की तिथियाँ उपलब्ध नहीं हैं, लेकिन यह निर्विवाद है कि वे प्रसिद्ध गायक बंधुद्वय उ. हद्दू खाँ और उ. हस्सू खाँ के समकालीन थे। कई बार उन्होंने उ. हद्दू खाँ और उ. हस्सू खाँ की साथसंगत की थी।

आरम्भ में उ. चुडियाँवाले इमाम बख्श एक उत्कृष्ट पखावज़ वादक के रूप में प्रसिद्ध थे। लेकिन हाजीसाहब के यहाँ नौकरी पर रहने के बाद उन्होंने तबला आत्मसात कर लिया था। उ. हाजी विलायत अली खाँ के तबलावादन से प्रभावित होकर उन्होंने घर छोड़कर उनके यहाँ नौकरी स्वीकार कर ली और हाजीसाहब का तबला ग्रहण कर लिया था। लगभग अठारह साल की सेवा काल में हाजीसाहब की कला आत्मसात करते रहे। यह बात जब हाजीसाहब को समझी, तब हाजीसाहब ने उदार मन से कलाप्रेमी उ. इमाम बख्श को स्वीकार कर अपना शागिर्द बना लिया।

हाजीसाहब की पत्नी लखनऊ घराने के उ. बख्शू खाँ की पुत्री थी। हाजीसाहब अपनी पत्नी को गुरूस्थान में मानते थे, इसलिए उन्होंने गंडाबंधन का कार्यक्रम याने शागिर्दी की रस्म को अपनी पत्नी से पूरा किया था। उनकी बीवी ने गंडा के स्थान पर अपनी चुडियों का प्रयोग बड़ी कल्पकता से करने के कारण वे उ. चुडियाँवाले इमाम बख्श नाम से प्रसिद्ध हुए।

उ. चुडियाँवाले इमाम बख्श खाँसाहब फर्रुखाबाद घराने के उत्कृष्ट वादक एवं रचनाकार के रूप मे अजरामर हो गए। उनकी बनाई हुई असंख्य रचनाएँ बेजोड हैं, जो आज भी तबला कलावंत बड़े आदर से बजाते हैं।

उनके पुत्र का नाम उ. हैदर बख्श था। उ. हैदर बख्श की आयु ९५ वर्ष की थी, उस समय उ. अमीर हुसेन खाँ ८-९ बरस के थे और उन्होंने कुछ वर्षों तक उ. हैदर बख्श से भी शिक्षा प्राप्त की थी।

५.१६.१ ''**तिधारी गत** ताल - त्रिताल रचना - उ. चुडियाँवाले इमाम बख्श खाँसाहब

पं. हिमांशु महंतजी से प्राप्त

धिनधिनधिन	धागेनधागेन	धागेनतकिट	तकिटतकिट।	
x				
धाडाघिनधाडा	घिनधाडाघिन	तकधिनतक	धिनतकधिन।	
२				
तकतकतक	तिनतिनतिन	तागेनतागेन	तागेनधात्रक।	
०				
धागेनधात्रक	धागेनधात्रक	धागेन घेतक	घेतक घेतक।	धा'' १८
३				x

५.१७ उ. सलारी खाँसाहब (फर्रुखाबाद घराना)

उ. सलारी खाँसाहब फर्रुखाबाद घराने के एक प्रसिद्ध कलाकार हुए। उनके जन्म -मृत्यु की तिथियों की जानकारी उपलब्ध नहीं है, लेकिन वे उ. चुडियाँवाले इमाम बख्श खाँसाहब के समकालीन थे। यदि ऐसे मान लिया जाए, तो उनका समय सन १८५० के आसपास का होना चाहिए।

पूरब के इतिहास में उनका नाम एक उत्कृष्ट तबलानवाज़ एवं रचनाकार के रूप में अजरामर हुआ है। फर्रुखाबाद घराने के संस्थापक उ. हाजी विलायत अली खाँसाहब के वे वरिष्ठ शागिर्द थे। वे एक उत्कृष्ट वादक के साथ श्रेष्ठ रचनाकार भी थे। उ. हाजीसाहब की रचनाओं के उन्होंने बनाए हुए जोड़ (जबाब) अप्रतिम हैं। उत्कृष्ट लयबंधों का एवं सुयोग्य बोलों का उपयोग कर रचना बनाने की उनकी तकनीक विलक्षण थी। भाषा समृद्धी एवं उत्कृष्ट लयबंध, ये उनके रचनाओं की विशेषताएँ थी। उनकी रचनाओं से उनकी अमोघ कल्पनाशक्ति एवं प्रतिभा का अनुभव होता है।

५.१७.१ ''**तिलयी मंझेदार गत** रचना - उ. सलारी खाँसाहब

धगत्तकिट	तकधिनतक	तिंगननगन	घिडनगतक ।
x			
तकधिनतक	धगत्तकिट	तकधिनतक	तिंगननगन।
२			

तकत्तकिट	तकतिनतक	तिंगननगन	घिडनगतक ।
०			
तकधिनतक	धगत्तकिट	तकधिनतक	तिंगननगन ।
३			
धगत्तकिटतक	धिनतकतिंगनन	गनघिडनगतक	तकधिनतकधग।
x			
ऽत्तकिटतकधिन	तकतिंगननगन	तकत्तकिटतक	तिनतकतिंगनन ।
२			
गनघिडनगतक	तकधिनतकधग	ऽत्तकिटतकधिन	तकतिंगननगन ।
०			
धगत्त किटतक	धिनतकतिंगनन	गनघिडनगतक	तकधिनतकधग।
३			
ऽत्तकिटतकधिन	तकतिंगननगन	तकत्तकिटतक	तिनतकतिंगनन ।
x			
गनघिडनगतक	तकधिनतकधग	ऽत्तकिटतकधिन	तकतिंगननगन ।
२			
धगत्तकिटतकधिनतक	तिंगननगनघिडनगतक		
०			
तकधिनतकधगत्तकिट	तकधिनतककतिंगननगन।		
तकत्तकिटतकतिनतक	तिंगननगनघिडनगतक		
३			
तकधिनतकधगत्तकिट	तकधिनतकतिंगननगन। धा'' १९		
	x		

प्रस्तुत गत उ. हाजीसाहब की गत का जवाब (जोड़ा) है। हाजीसाहब की गत का 'नागेतिरकिट' शब्द निकालकर उ. सलारी खाँसाहब ने उनके बन्दिश का लाजवाब जोड़ा बनाया है। इस गत के पहले आवर्तन में तिस्त्र जाति, दुसरे आवर्तन से तीसरे आवर्तन की आठवीं मात्रा तक चतस्त्र जाति, तीसरे आवर्तन की नवीं मात्रा से सोलहवीं मात्रा तक पहले आवर्तन के लय की दुगुन का प्रयोग किया है।

५.१८ उ. करामत उल्लाह खाँसाहब (फर्रुखाबाद घराना)

उ. करामत उल्लाह खाँसाहब का जन्म १९१८ में उत्तर प्रदेश के रामपूर में संगीतज्ञों के एक प्रसिद्ध परिवार में हुआ। वे फर्रुखाबाद घराने के वादक थे। उन्होंने उमर के छ: बरस से पिताजी तबला नवाज़ उ. मसीत खाँसाहब से तबले की शिक्षा का आरम्भ किया।

उ. करामत उल्लाह खाँसाहब युवावस्था में कलकत्ता आ गये और अपना कार्यक्षेत्र बंगाल चुना। जीवनपर्यंत आकाशवाणी के कलकत्ता केन्द्र में स्टाफ कलाकार के रूप में सेवारत रहे। वे फर्रुखाबाद घराने की वादन शैली में माहिर थे। फर्रुखाबाद घराने के तबलावादक होते हुए भी उन पर बनारस घराने का बड़ा प्रभाव था। उत्कृष्ट तैयारी, अक्षरों का सुस्पष्ट निकास, आकर्षक मांडणी के कारण उनका तबलावादन परिणामकारक होता था। स्वतंत्र तबलावादन के साथ-साथ साथसंगत में विशेषत: तंतुवादन की संगत में उनकी निपुणता थी। उनकी मधुर संगति के लिए वे अपने समय के गायक-गायिकाओं में बहुत लोकप्रिय थे। उनके सोलो वादन का एक ग्रामोफोन रिकार्ड भी उपलब्ध है, जिसमें धमार, तीनताल, कहरवा तालें बजाई हैं।

उनके शिष्यों में पुत्र उ. साबीर खाँ, नरेंद्र घोष, शंख चटर्जी, उमर डे, कन्हाई दत्त, कमलेश चक्रवर्ती इनका समावेश है।

३ दिसंबर, १९७७ को कलकत्ता में उनका स्वर्गवास हुआ।

५.१८.१ ‘‘**गतटुकड़ा** स्त्रोतागता यति रचना - उ. करामतुल्लाह खाँसाहब

तकिटधा x	ऽऽतिऽ	धिरधिरकिटतक	ताऽ धिरधिर ।
किटतक ताऽ २	धागेनधा	गदिगन	नातेटता ।
कत् ०	गेनाऽक	थूनथून	थूनकड़।
धाऽनधाऽन ३	धाऽकड	धाऽनधाऽन	धाऽकड ।

धाऽनधाऽन	धाऽकतकत	क ऽत क ड	धाऽनधाऽन ।
x			
धाऽकड	धाऽनधाऽन	धाऽकड	धाऽनधाऽन ।
२			
धाऽकतकत	क ऽत क ड	धाऽनधाऽन	धाऽकड ।
०			
धाऽनधाऽन	धाऽकड	धाऽनधाऽन	धाऽकतकत । धा'' २०
३			x

प्रस्तुत रचना उ. करामतुल्लाह खाँसाहब की सरल रचना है। अन्त में तिहाई के साथ जोरदार सम पर आती है।

५.१९ उ. मुनीर खाँसाहब (फर्रुखाबाद घराना)

उ. मुनीर खाँसाहब का जन्म सन १८६३ को मेरठ जिले के ललियाना गाँव में हुआ। प्रारम्भ में उन्हें तबलावादन की शिक्षा अपने पिताजी उस समय के ख्यातनाम तबला नवाज़ उ. काले खाँसाहब से प्राप्त हुई। उमर के पंद्रहवें साल में फर्रुखाबाद घराने के संस्थापक उ. हाजी विलायत अली खाँसाहब के सुपुत्र उ. हुसेन अली खाँसाहब का गंडा बाँध कर उनसे लगभग पंद्रह साल तबला वादन की विद्या प्राप्त की। बाद में दिल्ली घराने के उ. बड़े काले खाँसाहब के सुपुत्र खलीफा उ. बोली बख्श खाँसाहब की गंडाबंध शागिर्दी स्वीकार कर ली। उ. बोली बख्श खाँसाहब के पुत्र उ. नत्थु खाँसाहब और उ. मुनीर खाँसाहब दोनों गुरुबंधु थे। इनके सिवा उ. नजर अली खाँसाहब, ताज खाँ नासर खाँ पखावज़ी आदि कुल चोबीस उस्तादों से शिष्यत्व लेकर उन्होंने अपना तबला समृद्ध किया था।

उत्कृष्ट तबला वादन के सिवा उनके साथसंगत की प्रशंसा अनेक गवय्ये एवं तंतुवादकों से की गई है। स्वतंत्र तबलावादन एवं साथसंगत दोनों में उनका श्रेष्ठत्व सर्वमान्य था। वे एक प्रतिभावान रचनाकार एवं समर्थ शिक्षक थे। उनसे बनाई गई रचनाएँ उनकी बुद्धिमत्ता, कला एवं विद्वत्ता की साक्ष देती है। उन्होंने सिखा कर तैयार किया हुआ शिष्यसंप्रदाय इतना विशाल था कि उनके जैसा उदार मन का उस्ताद भारतीय संगीत क्षेत्र में क्वचित् ही हुआ है।

उन्होंने तैयार किए हुए शिष्यों में उनका भांजा खलीफा उ. अमीर हुसेन खाँ, भतीजा उ. गुलाम हुसेन खाँ, उ. अहमदजान थिरकवाँ खाँ, उ.हबीबुद्दीन खाँ (मीरत), उ. नझीर खाँ पानिपतवाले, उ. अल्लाह मेहेर, उ. सादक हुसेन खाँ, उ. मुश्ताक हुसेन खाँ, उ. शमशुद्दीन खाँ, उ. बाबालाल इस्लामपूरकर, उ. विलायत हुसेन खाँ, उ. निसार हुसेन खाँ, उ. हसना खाँ, डॉ. फैज जंग बहादूर (हैदराबाद), उ. अयूब मियाँ, उ. औलाद हुसेन (खैरागढ), उ. अब्दुल रहिम मियाँ (बऱ्हानपूर), पं. गणपतराव कवठेकर (डवरी), पं. विष्णूजी शिरोडकर एवं पं. सुब्बरावमाम अंकोलेकर (गोवा) आदि प्रथितयश तबालावादक हुए।

विभिन्न घरानों के वादन विशेषताओं से अच्छी वैशिष्ट्यों को लेकर उन्होंने खुद का प्रगल्भ तबला बनाया। ''त्यामुळे त्यांच्यापासून एका नव्या घराण्याची मुहूर्तमेढ रोवली गेली. त्यांच्या आयुष्याचा मोठा भाग त्यांनी मुंबईत घालवला, त्यामुळे त्यांच्या घराण्याला 'बम्बई घराणे' असे संबोधले जाते.'' २१ कुछ साल वे रायगड़ के महाराज के दरबार में उस्ताद थे। बीच-बीच में उनका वास्तव्य हैदराबाद (द.) में बहन के पास रहता था। उनके कहने अनुसार उनके बाद खलीफा पद का वारसा उ. अमीर हुसेन खाँसाहब के पास आया।

१८ नवंबर, १९३७ को उ. मुनीर खाँसाहब रायगड़ में पैगम्बरवासी हो गए।

उ. मुनीर खाँसाहब की रचनाओं में उनकी तंत्रपद्धति, जाति एवं लयबंधों की योजना सामान्यत: वैशिष्ट्यपूर्ण होकर उनमें विविध प्रकार के चलन तथा दायाँ-बायाँ पर आघातों से उत्पन्न होनेवाले नादों को समतोल महत्त्व दिया हुआ दिखाई देता है। उनकी रचनाएँ रियाज़ करने के लिए आसान होकर विविध प्रकार की आन्दोलन, चढ़ाव-उतार से समृद्ध होती है।

उ. अहमदजान थिरकवाँ को उ. मुनीर खाँ के बारे में पूछा तब उन्होंने कहा था, ''बेटा क्या बताऊँ ? उनके पास तो इल्म का समिंदर था। हर बार नयी चीज से पेश आते थे। जब तलक हाथों से निकलती नहीं, तब तक दूसरी नहीं बताते। बेटा, यह तबला है, कालेज में नहीं सिखाया जाता। उस्ताद के सामने ही सीखना पड़ता।'' २२

५.१९.१ ‘‘**ताशानक्कारानी गत** ताल-एकताल रचना - उ. मुनीर खाँसाहब

तकतकतक	तकतकतक ।	तकतकतक	तकऽऽ ।
x		०	
नगनगनग	नगनगनग ।	धिरधिरधिर	धिरधिरधिर ।
२		०	
नगनगनग	नगनगनग ।	धिरधिरधिर	धिरधिरधिर ।
३		४	
तकिटधाऽन	धाऽऽतूऽना ।	तकिटधाऽन	धाऽऽतूऽना ।
x		०	
तकिटधाऽन	तकिटधाऽन ।	तकिटधाऽन	धाऽऽतूऽना ।
२		०	
तकिटधाऽन	धाऽऽतकिट ।	धाऽनधाऽऽ	तकिटधाऽन । धीं’’ २३
३		४	x

यह तिस्त्र जाति में निबद्ध समा यति की खूबसूरत बन्दिश है। इसमें ताशा, नक्कारे जैसे बोलों का प्रयोग किया है।

५.२० उ. अहमदजान थिरकवाँ खाँसाहब (फर्रुखाबाद घराना)

उ. अहमदजान थिरकवाँ खाँसाहब का जन्म सन १८८१ में उत्तर प्रदेश के मुरादाबाद में हुआ। उनके नानाजी उ. कलंदर बख्श खाँसाहब विद्वान तबलावादक एवं रचनाकार थे। उ. कलंदर बख्श खाँसाहब के दो पुत्र अर्थात् उ. थिरकवाँ खाँसाहब के मामाजी उ. फैय्याज़ हुसेन खाँ एवं उ. बसवार खाँ उत्तम तबलावादक थे। उ. थिरकवाँ खाँसाहब के चाचाजी उ. शेर खाँ भी उत्कृष्ट तबलावादक एवं रचनाकार थे। उनके पिताजी उ. हुसेन बख्श खाँ सारंगीवादक थे। इसी कारण खाँसाहब को बचपन से ही संगीत, विशेषत: तबले का खुराक पिलाया गया। उ. अहमदजान थिरकवाँ खाँसाहब १०-११ साल के थे, तभी उनके बड़े भाई ने अर्थात् मियाँजान ने उन्हें मेरठ के पास ललियाना में उ. मुनीर खाँ के यहाँ तबला सीखने लाया। उसी समय उ. मुनीर खाँ ने उन्हें कुछ बजाने को कहा। उधर तबला बजाते समय उ. अहमदजान थिरकवाँ खाँसाहब के हाथ तथा थिरकती

हुई उँगलियों की लयबद्ध हलचल देख कर उ. मुनीर खाँ के पिताजी उ. काले खाँ बोले, ''देखो यह बच्चे का हाथ लय में कैसा थिरकता है।'' २४ तभी से वे खाँसाहब को 'थिरकू' कहने लगे। आगे जा के उनका नाम थिरकू से 'थिरकवाँ' हो गया और उसी नाम से संगीत जगत् में उनकी पहचान बनी। उ. मुनीर खाँसाहब की शिष्यता ग्रहण करके उन्होंने २६ साल विद्यार्जन किया। उ. मुनीर खाँसाहब ने २४ उस्तादों से तालीम ली थी। उ. मुनीर खाँसाहब से उन्हें लखनऊ, फर्रुखाबाद, दिल्ली एवं अजराड़ा इन चार घरानों का बाज प्राप्त हुआ।

उ. अहमदजान थिरकवाँ खाँसाहब के कलाजीवन प्रवास के महत्त्वपूर्ण घटक नीचे प्रस्तुत हैं।

- उ. मुनीर खाँसाहब से गंडाबंधन १८९२।
- विद्यार्जन, हररोज १४-१५ घंटों का रियाज।
- तैयार और परिपक्व तबलावादन एवं साथसंगत।
- वाडिया मूव्हिटोन्स डॉक्युमेंटरीज-तीस साल की उमर में तबलावादन एवं साथसंगत १९११।
- गंधर्व नाटक मंडळी में तबलावादक की नौकरी १९१३-१९२०।
- उस्ताद को रामपूर दरबार का राजाश्रय था। रामपूर नबाब के दरबारी वादक १९३५-१९४६।
- मॅरिस कॉलेज (भातखंडे हिंदुस्थानी संगीत महाविद्यालय-लखनऊ) में तबला प्राध्यापक की नौकरी १९४८-१९४९।
- जीवन में उनको अनेक मान-सम्मान एवं उपाधियाँ मिली। उनमें से मुख्य हैं, १९५३-१९५४ में राष्ट्रपति पुरस्कार और १९७० में भारत सरकार द्वारा सम्मानजनक 'पद्मभूषण' उपाधि। उनके जीवन पर वृत्तचित्र भी बना है।
- उन्होंने देश के सभी प्रतिष्ठित संगीत सम्मेलनों में भाग लिया था तथा आकाशवाणी के राष्ट्रीय कार्यक्रमों में अनेक बार उनके वादन का प्रसारण हुआ था।
- नॅशनल सेंटर फॉर परफॉर्मिंग आर्टस्, मुंबई में तबला प्राध्यापक की नौकरी १९७१-१९७३।

उ. थिरकवाँ खाँसाहब को देश के संगीतज्ञों के बीच बहुत आदर प्राप्त था। खाँसाहब के कलागुणों की कदर करनेवाले उनके शिष्य, दानशूर रसिक, नबाब, एच्. एम्. व्ही. जैसी रेकॉर्डिंग कंपनियाँ, फिल्मस् डिविजन, आकाशवाणी, दूरदर्शन इनके प्रयत्नों के कारण उनकी असंख्य ध्वनिफित एवं डॉक्युमेंटरीज आज उपलब्ध हैं।

खाँसाहब की कला विशेषताओं को देखे तो पहले उन्हें कुदरती याने ईश्वरदत्त हथ्थे-पंजे की देन थी। उनके हाथों की उँगलियाँ लंबी और मांसल थी। हररोज १४-१५ घंटों की अविश्रांत मेहनत से उनके हाथ रियाजी हाथ थे। उनके तबले के बारे में विद्वान ऐसे कहते थे कि उनका तबला सुन कर गायन सुनने का आनंद मिलता है। फर्रुखाबाद का 'धिऽक्डधिंधा ऽधाधिंधा' पेशकार उ. थिरकवाँ खाँसाहब ने इतना अजरामर कर दिया है कि पेशकार के सन्दर्भ में इसी के अतिरिक्त दूसरी कोई भी कल्पना नजर के सामने नहीं आती है। धीमी लय, काव्यमय भाषा, कलात्मक निकास, सौंदर्यपूर्ण विराम, अनाघात स्थान, खाली-भरी का सौंदर्यपूर्ण प्रयोग, सम के पूर्व तिहाई, चतस्त्र जाति में तिस्त्र का प्रयोग कर फिर मूल चतस्त्र जाति में आगमन तो कभी तिस्त्र जाति के शब्दों का प्रयोग करके उसी में डेढ़ लय के कायदे का आरम्भ ये उनके 'पेशकार' की खास विशेषताएँ थीं। दिल्ली, अजराड़े के कायदे के साथ उनका फर्रुखाबाद घराने के कायदों का प्रस्तुतिकरण लाजवाब होता था। कायदे का विस्तार वे मर्यादित बलों से किया करते थे। फर्रुखाबाद चलन, 'घिनाऽधागेना धात्रकधागेना' यह अजराड़ा कायदा, 'धात्रकधि किटघिन' कायदा एवं उसकी रौ ये उनकी हाथ से बजी हुई चीज़े विश्व के अंत तक आदर्श रहेगी। कोई भी बाज हो अथवा स्वतंत्र वादन का कौनसा भी वादनप्रकार हो, उस घराने अथवा वादनप्रकार से प्रामाणिक रह कर ही उनका वादन होता था। उनके रेले में किनार और बायें की गूँज तथाकथित प्रवाही स्वरमय गूँजन से अटूट मिठास प्रतीत होती थी। सुंदर रूप से बजाएँ हुए उनके छोटे मुखड़े, मोहरे एवं टुकड़े भी श्रोताओं को अचंभित कर देते थे। लखनऊ एवं फर्रुखाबाद शैलियों से अलंकृत उनकी गतें, गतटुकड़े उनके सौंदर्यपूर्ण वादन की चरम सीमा थी। ''तबला-वादन के प्रस्तुतिकरण के आकृति/गढ़न (Form), शब्द-संपत्ति (Matter) और निकास (Process) इन तीन अंगों में से सबसे महत्त्वपूर्ण 'निकास' अंग के उ. थिरकवाँ

सर्वश्रेष्ठ तबला-वादक हो गए।'' २५ निकृष्ट साहित्य, वजनदार हाथ, प्रभावी निकास एवं नजाकत इन गुणों से उनका वादन हमेशा उच्चस्तरीय, प्रभावपूर्ण एवं रंगतदार हुआ करता था। स्वतंत्र तबलावादन की सभी चीजों पर उनका कमाल का प्रभुत्व था। स्वतंत्र वादन के उतनी ही उनकी साथसंगत परिपक्व थी। गंधर्व नाटक कंपनी में तबला संगत करके उन्होंने अपार लोकप्रियता प्राप्त की थी, जिस साथसंगत की यादें आज भी लोग भूल नहीं पाते। तबले की चाट पर योग्य स्थान पर तर्जनी का जोरदार आघात कर तुरन्त हाथ उठाने से उत्पन्न होनेवाली आस और उसके बाद गूँजनेवाली ध्वनिलहरियाँ, बायें की लव पर मध्यमा अथवा तर्जनी के जोरदार आघात के बाद निर्माण होनेवाला घुमारा, मैदान पर मांसल हथेली की दाब-घास से निर्माण होनेवाली गूँज अथवा मींड ये कर्णमधुर तबलावादन के लिए अत्यावश्यक विशेषताएँ खाँसाहब के हाथों में पूरी तरह थीं। लय की सभी मंझिलों में सुस्पष्ट बोल निकास एवं उनके हाथों से निकलनेवाला 'धिरधिरकिटतक' गतिमान, आकर्षक एवं लाजवाब होता था। इस गति में थिरकने से उनका नाम 'थिरकवाँ' रूढ हुआ। महफिल में तबला वादन शुरू करने से पहले वे दाये हाथ की उँगलियों का स्पर्श तबले की चाटी से करके बाद में मस्तिष्क पर लगाते थे। और नीचे से उपर इस क्रम में दोनों हाथों का चेहरे पर स्पर्श किया करते थे। अजमेर के गरीब नवाज़ पीर तथा बुजुर्गों का चिंतन किया करते थे। उनकी दुवा अंत:करण में रखकर घंटों तक श्रोताओं को अपने वादन का आनंद देते थे।

लय पर प्रभुत्व एवं अलौकिक कल्पनाशक्ति से उनका पेशकार श्रोताओं को मंत्रमुग्ध करता था। दायाँ-बायाँ के आघात स्थानों को वे कितना महत्त्व देते थे, यह उनकी उँगलियों की स्पष्ट मुद्रा से समझता है। कायदा दिल्ली, पूरब या अजराड़ा घराने का हो, उसी घराने से प्रामाणिक रहकर वे बजाते थे। कायदे के माफक एवं नाविन्यपूर्ण बल किया करते थे। रेले की गूँज, तिस्त्र, चतस्त्र, मिश्र जाति की पखरण कर्णमधुर लगती थी। उनकी पढ़न्त विशेष आकर्षक थी। द्रुत लय में मधुर ठेके के साथ फर्रुखाबाद चलन, रेले की गुंफण में विविध गतें, गतपरन, गतटुकड़े, चक्रदार बजाते समय उनके हाथ की तैयारी, मधुरता, विद्वत्तापूर्ण रचना ये सभी बातें मन को छू लेती हैं, प्रकाशमान करती हैं।

उ. थिरकवाँ खाँसाहब के प्रमुख शिष्यों में पं. जगन्नाथबुवा पुरोहित, पं. लालजी गोखले, पं. निखील घोष, पं. नारायण जोशी, पं. बापू पटवर्धन आदि विशेष उल्लेखनीय हैं।

उ. थिरकवाँ खाँसाहब अन्तिम समय तक चुस्त-दुरुस्त रहा करते थे। अन्तिम समय में कुछ दिनों के लिए वे बम्बई चले गए थे, परन्तु वे लखनऊ से बेहद प्यार करते थे। अपने जीवन की संध्याकाल में खाँसाहब अपनी दो इच्छाएँ व्यक्त किया करते थे - एक कि आयुष्य के अन्त तक याने जब तक जिन्दा है तब तक, तबीयत से सर्वांगसुंदर तबला बजाते रहने की एवं दूसरी इच्छा थी, अन्तिम श्वास लखनऊ में ही छोड़ने की। ये दोनों इच्छाएँ परवरदिगार ने पूरी की। खाँसाहब मुहर्रम करने लखनऊ आए। पुन: बम्बई जाने की तैयारी की। बच्चों को दुआएँ दीं, सवारी पर बैठे, खुदा हाफिज़ कहा और अलविदा हो गए। १३ जनवरी, १९७६ को इस तबले के सूरज का अस्त लखनऊ में ही हुआ।

५.२०.१ गत ताल -त्रिताल उ. अहमदजान थिरकवाँ खाँसाहब के वादन से गुरूवर्य पं. नारायण जोशीजी से प्राप्त

दी घिडनग	तक्घिडनग	धिनघिडनग	तिरकिटतक।
x			
धिनगिनधिन	गिननगतक	धिनघिडनग	तिरकिटतक।
२			
तातीऽ	ताक्डांऽ	तिनकिडनग	तिरकिटतक।
०			
धाऽ	ऽता	ऽदी	घिडनग। धा
३			x

प्रस्तुत तिस्त्र जाति की गत में १ से ८ मात्रा तक समान अक्षरसंख्या के बोलसमूहों से चलनेवाली गत खाली में 'तातीऽ ताक्डांऽ' एवं अन्तिम चार मात्रा में धाऽ ऽता ऽदी घिडनग' इन बोलों से अलग नजाकत पैदा करके बहुत ही खूबसूरती से सम पर आती है।

५.२१ उ. अमीर हुसेन खाँसाहब (फर्रुखाबाद घराना)

उ. अमीर हुसेन खाँसाहब का जन्म सन १८९९ को मेरठ जिले के बनखंडा में हुआ। उनके पिताजी ख्यातनाम सारंगीवादक उ. अहमद बख्श खाँसाहब हैदराबाद निजाम के दरबारी वादक थे। उ. अमीर हुसेन खाँसाहब का बचपन हैदराबाद में बीता।

तबलावादन की प्रारम्भिक शिक्षा उनको अपने पिताजी से प्राप्त हुई थी। उनके मामाजी बम्बई के विद्वान कलाविद उ. मुनीर खाँसाहब उनके घर याने अपने बहन के यहाँ हैदराबाद में हमेशा वास्तव्य किया करते थे। तभी छोटे अमीर का तबला सुनकर खुश होते थे और उसे तालीम दिया करते थे। किन्तु उनके बम्बई वापस चले जाने पर यह क्रम टूट जाता था। अत: सन १९१४ में उ. अमीर हुसेन खाँ ने बम्बई जाने का निश्चय किया, जिससे तालीम में रुकावट न आए। अपना घर छोड कर वे हैदराबाद से अपने मामाजी के पास बम्बई आए ओर फिर बम्बई के ही होकर रह गए। उसके बाद दीर्घकाल उस्तादजी से अखंड तालीम प्राप्त हुई थी।

उ. अहमदजान थिरकवाँ एवं उ. अमीर हुसेन खाँ ये दोनों उ. मुनीर खाँसाहब के प्रमुख शागिर्दों में थे। इसलिए अपने देशाटन में कभी बडोदा, दिल्ली-मेरठ, रायगड जाते वक्त इनको अपने साथ ले जाया करते थे। अवसर मिलने पर महफिल में इन्हें साथसंगत अथवा स्वतंत्र तबला वादन पेश करने का मौका देकर उनको प्रोत्साहित भी किया करते थे। चौबीस साल की उमर में उ. अमीर हुसेन खाँसहब इतने पारंगत हुए थे। कि उ. मुनीर खाँ ने उन्हें रायगड के दरबार बुला कर रायगड के महाराज कलापारखी नरेश चक्रधर सिंह को उनका तबला सुनवाया था। उनके आकर्षक वादन पर खुश होकर महाराज ने उन्हें आशीर्वाद एवं बड़ी राशि की थैली भेंट दी थी।

उ. अमीर हुसेन खाँसाहब विलक्षण वादक, अद्‌भूत रचनाकार, उत्तम शिक्षक, अच्छे आदमी एवं श्रेष्ठ कलावंत थे। ''कठोर रियाज, चिंतन, और मनन के जरिए उ. अमीर हुसेन खाँसाहब ने उस तबले को न केवल सीखा, लिखा, और कंठस्थ किया, बल्कि उसको सिद्धहस्त भी किया।'' २६ उ. मुनीर खाँसाहब से दीर्घकाल प्राप्त हुई सभी घरानों की शिक्षा, कई बरसों का रियाज, चिंतन

इन सभी कारणों से खाँसाहब के वादन का दर्जा अत्युच्च था। कितनी भी क्लिष्ट एवं कठिन रचना खाँसाहब के हाथों से लीलया (सहजता से) बजती थी। दो उँगलियों का 'धिरधिर' उनके हाथ से कल्पनातीत गति में बजता था। बायें की पूडी कितनी भी सघन (जाड) हो, फिर भी किसी भी लय में हर एक रचना बजाते समय बायें के सौंदर्यपूर्ण प्रयोग से निर्माण होनेवाला चैतन्य, यह खाँसाहब की खासियत थी। तबले की स्याही पर भी उनका हर एक बोल सशक्त और सौंदर्यपूर्ण बजता था। सारांश में हर एक बोल स्पष्ट, स्वच्छ एवं उस पर किए हुए चिंतन का प्रतिनिधित्व करता था।

उ. अमीर हुसेन खाँसाहब ने बुजूर्गों की हजारों रचनाएँ आत्मसात की थीं, साथ ही साथ खुद की अनगिन रचनाओं के योग से तबला साहित्य समृद्ध किया। असंख्य कायदे, गतटुकड़े जैसी उनकी रची हुई बन्दिशें पुराने उस्तादों की बन्दिशों जितनी ही सुंदर हैं। तालशास्त्र का अभ्यास, तबले के हर एक वादनप्रकार का गहरा चिंतन, भाषासमृद्धि के कारण खाँसाहब की बन्दिशों में कविता का आभास होता है। विविध बाजों पर आधारित पेशकार, कायदे, रेले, गतें, गतपरन, गतटुकड़े तिहाई, चक्रदार आदि सभी प्रकार की आकर्षक रचनाएँ उन्होंने रची हैं। इन रचनाओं में उनकी लामिसाल (अजोड़) प्रतिभा एवं वादनकौशल का अनुभव होता है। उनसे रचाये गए मिश्र जाति के कायदे, रेले, पंजाबी चालें ये प्रकार तो अवर्णनीय हैं। उन्होंने रचायी हुई असंख्य रचनाएँ उनके कल्पनाशक्ति, अमोघ प्रतिभा एवं विद्वत्ता की साक्ष देती है। उनकी रचनाएँ नाविन्यपूर्ण, बजाने या रियाज करने में आसान, लयबंध और अक्षरों के घडन की वैशिष्ट्यपूर्ण मांडणी से की हुई है। उन्होंने सतारिये पं. अरविंद पारिख को कई गतें तथा तोडे, सतार पर संरचना (Compose) करके दिए थे। सुप्रसिद्ध सिनेसंगीत दिग्दर्शक तथा उनके शागिर्द गुलाम महंमद खाँ को संगीत दिग्दर्शन में मार्गदर्शन किया था। मुस्लीम कलाकारों के कुरेशी जमात का 'चौधरी' होने का सम्मान उन्हें प्राप्त था। सन १९६१ में गांधर्व महाविद्यालय मंडल ने उनको सम्मानित किया था। वे अफाट वाचन, कुस्ती एवं उर्दू शेरो-शायरी के शौकीन थे।

केवल तबले में ही नहीं, तो भारतीय संगीत के इतिहास में ऐसा असामान्य व्यक्तिमत्व क्वचित ही हुआ है, जो बजायक, बतायक, बनायक इन तीनों क्षेत्रों पर कमाल का प्रभुत्व पाकर भी एक अच्छे आदमी के रूप में भी महान था।

उनकी प्रशंसा में उ. हबीबुद्दीन खाँसाहब ने कलकत्ता की एक महफिल में अत्यंत समर्पक उद्‌गार निकाले थे - ''मेरठ ने हिन्दुस्तान को बहुत आलाह दर्जे के तबलिए दिए, लेकिन अमीर हुसेन जैसा बजायक, बनायक, बतायक और आदमी अभी तक पैदा ही नहीं हुआ।'' २७ फर्रुखाबाद के ख्यातनाम उ. मसीत खाँ ने कलकत्ता के कार्यक्रम में उ. अमीर हुसेन खाँसाहब का तबलावादन सुनते वक्त अपने शागिर्द पं. ज्ञानबाबू घोष से संवाद किया - ''बेटे ग्यान ! मैंने आज तक इतना बढ़िया तबला नहीं सुना।'' २८

उ. अमीर हुसेन खाँसाहब ने उच्च दर्जे के शास्त्रीय तबलावादन का प्रचार एवं संगीत जगत् में तबलावादकों को उचित सम्मान प्राप्त होने हेतु पूरे जीवन में प्रयास किया। असंख्य शागिर्दों को बहुत प्रेम से अपने ज्ञान तथा विद्वत्ता का भांडार खोलकर सिखाया था। किसी चीज की अपेक्षा न रखते हुए, खुद की परिस्थिति की चिंता न करते हुए खाँसाहब ने जीवनभर विद्यादान किया, इसमें खाँसाहब की महान उदारता का अनुभव होता है। आज देश-विदेश में उनके असंख्य शिष्य तबले की उपासना कर रहे हैं।

उ. अमीर हुसेन खाँसाहब ने अपने कार्यक्षेत्र बम्बई में रहकर सैंकडो शिष्य तैयार किए थे और महाराष्ट्र में तबले का खूब प्रचार किया था। उनके शिष्यों में मुख्यत: उनके पुत्र उ. फकीर हुसेन खाँ, उ. गुलाम रसुल खाँ, उ. तुफेल अहमद (पाकिस्तान), पं. पंढरीनाथ नागेशकर, पं. अरविंद मुळगांवकर, पं. निखील घोष, डॉ. आबान मिस्त्री, श्री. पांडुरंग साळुंखे आदि उल्लेखनीय हैं।

५ जनवरी, १९६९ को यकृत के कर्करोग से मुंबई में उनका निधन हुआ।

५.२१.१ ''गत ताल-झपताल रचना - उ. अमीर हुसेन खाँसाहब

धाऽकिटतक	थूँऽकिटतक	।	ताऽधेत्	तगेऽन्न	धाऽनाना	।
x			२			
किटतकताऽ	धिरधिरकिटतक	।	ताऽऽ	नानाकिटतक	ताऽतिरकिटतक	।
०			३			
धिरधिरकिटतक	ताऽतिरकिटतक	।	धिरधिरकिटतक	ताऽतिरकिटतक	धिनतकधाऽतिर	।
x			२			
घिटतगधिनतक	धाऽतिरघिटतग	।	तिंऽतिरकिटतक	ताऽतिरकिटतक	धिनतकधाऽतिर	।
०			३			
घिटतगधिनतक	धाऽतिरघिटतग	।	धाऽऽ	धिनतकधाऽतिर	घिटतगधिनतक	।
x			२			
धाऽतिरघिटतग	तिंऽतिरकिटतक	।	ताऽतिरकिटतक	धिनतकधाऽतिर	घिटतगधिनतक	।
०			३			
धाऽतिरघिटतग	धाऽऽ	।	धिनतकधाऽतिर	घिटतगधिनतक	धाऽतिरघिटतग	।
x			२			
तिंऽतिरकिटतक	ताऽतिरकिटतक	।	धिनतकधाऽतिर	घिटतग धिनतक	धाऽतिरघिटतग	। धीं''२९
०			३			x

इस गत में १ से १० मात्रा तक प्रयोग किए हुए बोलों का वजन, उनके चढ़ाव-उतार वैचिर्त्यपूर्ण हैं। दूसरे आवर्तन की पाँचवीं मात्रा से चौथे आवर्तन की अन्तिम मात्रा तक रचायी गई तिहाई की गति, रवनिर्मिति क्षमता, बोलों के जोरदार एवं कमजोर आघात इनके कारण रचना टेढ़ी लगती है। सुयोग्य निकासों से पेश हुई तो उसमें अहिनकुल द्वंद्व का आभास होता है।

५.२२ पं. रामसहाय मिश्र (बनारस घराना)

बनारस घराने के प्रवर्तक पं. रामसहाय मिश्र बनारस के एक संगीत व्यवसायी कथ्थक परिवार के थे। बाल्यकाल में वे नृत्य किया करते थे। इनका जन्म सन १८३० को बनारस में हुआ। उन्होंने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा बचपन में अपने पिताजी एवं चाचाजी से प्राप्त की थी। बहुत रियाज से तैयार हुआ उनका तबला लखनऊ के खलीफा उ. मोदू खाँ ने जब सुना, तब खुश होकर उन्होंने पं. रामसहायजी को अपना शागिर्द बनाया। पं. रामसहायजी दिन रात रियाज में लगे रहे। उस्तादजी

अपने शिष्य की लगन, परिश्रम तथा एकाग्रता पर बहुत प्रसन्न थे। बारह वर्षों तक यही क्रम अनवरत चला। पंडितजी खाँसाहब के परिवार के सदस्य के रूप में रहकर सीखा करते थे। उ. मोदू खाँसाहब की पत्नी पंजाब के किसी उस्ताद की पुत्री थी। उनको तबले का अच्छा ज्ञान था। इस प्रकार उस्तादजी से लखनऊ की तालीम और गुरुमाता से पंजाब घराने की शिक्षा पं. रामसहायजी को मिलने लगी।

उ. मोदू खाँ से कई वर्षों तक शिक्षा प्राप्त कर पंडितजी अपने जीवन की उत्तरावस्था में स्थायी रूप से बनारस रहने लगे। तबले की वादनशैली में परिवर्तन किया एवं नई रचनाओं का सृजन किया। कालान्तर में उन्होंने तबला वादन में अपने चिंतन, सृजन और मौलिक रचनाओं से एक नवीन बाज तथा अपनी एक स्वतंत्र शैली निर्माण की, जो बनारस घराने के नाम से पहचानी जाने लगी। उन्होंने एक सशक्त बनारस घराने को जन्म दिया। अब मन में यह प्रश्न आता है कि लखनऊ के खलीफा के पास सीख कर उन्होंने लखनऊ घराने का प्रसार क्यों नहीं किया? इसका निराकरण पं. हिमांशु महंतजी ने पं. किशन महाराजजी से प्राप्त हुई जानकारी के आधार पर ऐसा किया कि ''विद्यार्जन के बाद जब पं. रामसहायजी ने उ. मोदू खाँसाहब से पूछा, 'आपकी गुरुदक्षिणा क्या है?' तब उ. मोदू खाँसाहब ने यह गुरुदक्षिणा बताई कि, 'मैंने आज तक जितना तबला आपको सीखाया है, वो आज के बाद मत बजाना। अगर आप बनारस जाकर इसी तबले को बजाते रहे, तो क्या परम्परा का बढ़ाव होगा? मैंने जो सिखाया है उस शिक्षा के आधार पर उधर जाकर बनारस घराने की स्थापना करो'। तो पं. रामसहायजी ने बनारस जाकर खूब रियाझ किया और लखनऊ के वाजीद अली शाह नबाब के दरबार में सात दिन ऐसा तबला बजाया कि उनकी जोड में बजाने के लिए कोई भी तैयार नहीं हुआ। पं. रामसहायजी का तबला पं. कुधवसिंह महाराज, पं. भवानीसिंह जैसे बड़े-बड़े कलावंतों ने सुनकर खूब प्रशंसा की। बनारस के शौकिनों ने उनका बड़ा सत्कार किया। दरबार में महाराजजी ने उनको बनारस घराने का किताब प्रदान किया। ज्येष्ठ तबलावादकों ने उनके भूजाओं की पूजा की। सभी ने अपने अपने धागे उन्हें बाँधे। तभी उस दरबार में बनारस घराने का नामांकन हुआ।'' ३०

प्राप्त हुई रचनाओं में खुद की रचनाओं के योग से पंडितजीं ने शिष्यों को बहुत खजाना रखा। अपने भाई पं. गौरीसहायजी के सुपुत्र पं. भैरवसहायजी को उन्होंने छः बरस तालीम दी। उनके शिष्यों में उनके छोटे भाई पं. जानकीसहाय, पं. रामशरण, पं. यदुनंदन, पं. बैजू महाराज तथा पं. परतप्पू महाराज के नाम उल्लेखनीय हैं।

छियालीस बरस की उमर में पं. रामसहाय मिश्र स्वर्गवासी हुए।

५.२२.१ ''**गतटुकड़ा** तालत्रिताल रचना - पं. रामसहाय मिश्र

x	तिरकिट	तकधेत्	ऽ	किटतक ।	
२	तेत्	किटतक	धेत्	क्डधिं ।	
०	ऽताऽ	किटतक	ताऽतिर	किटतक ।	
३	तिरकिट	तक धिरधिर	किटतक तकट	धाऽ ।	
x	ऽते	ऽत्त	धाऽ	तिरकिट ।	
२	तक धिरधिर	किटतक तकट	धाऽ	ऽते ।	
०	ऽत्त	धाऽ	तिरकिट	तक धिरधिर ।	
३	किटतक तकट	धाऽ	ऽते	ऽत्त ।	धा'' ३१ (x)

आड लयबंध में गूंथे हुए प्रस्तुत गतटुकड़े की तिहाई अप्रतिम है।

५.२३ पं. अनोखेलाल मिश्र (बनारस घराना)

पं. अनोखेलाल मिश्र जी का जन्म सन १९१४ को वाराणसी के एक निर्धन परिवार में हुआ। बचपन में ही माता-पिता दोनों का स्वर्गवास होने के कारण उनके दादी ने उनका लालन-पालन

किया। उन्हें प्रतिभा, लगन के साथ-साथ अभ्यास के प्रति गहरी रुचि थी। अपनी अल्प आयु में उन्होंने पं. भैरवप्रसाद मिश्र से तालीम लेना प्रारम्भ किया था।

योग्य गुरू की तालीम, पंद्रह वर्षों की अनवरत शिक्षा एवं अचाट रियाज-मेहनत ने पं. अनोखेलाल को अनोखा बना दिया। अल्पावधि में उन्होंने अखिल भारतवर्ष में नाम कमाया। उनके हाथ में शुद्ध बनारस घराने का बाज था। बनारस घराने की छाप उनके सम्पूर्ण वादन पर थी। किन्तु स्वतंत्र वादन में दिल्लीसहित अन्य घरानों के कायदे भी वे अत्यन्त शास्त्रशुद्ध पद्धति से प्रस्तुत किया करते थे। वे स्वतंत्र वादन तथा साथसंगत दोनों में पारंगत थे। उनका स्वतंत्र तबला वादन विलक्षण तैयारी, स्पष्टता एवं कर्णमधुरता आदि गुणों के कारण हमेशा परिणामकारक होता था। वादन में कायदे या चलन का विस्तार वे अनुशासनबद्ध, खाली-भरी तत्त्व के अनुसार, एकेक शब्द को बदल कर, दीर्घ काल तक प्रस्तुत किया करते थे। विलक्षण रियाज़ से बढ़ाए हुए दमसास से आखरी पलटे में भी उनका वादन समान सशक्तता के साथ संपन्न होता था। इसी दमसास के फलस्वरूप अतिद्रुत लय में एक उँगली से निरंतर बजनेवाला अत्यंत कठिन त्रिताल का ठेका 'ना धीं धीं ना' उनके हाथ से सुनने के लिए श्रोतृगण उत्सुक रहते थे। उनका 'धिरधिर' बोल का वादन आज भी याद किया जाता है। स्वतंत्र वादन के साथ-साथ अनेक संगीत संमेलनों में विविध प्रकार के कलावंतों की उत्तम साथसंगत करने के कारण उनका नाम सर्वतोमुखी हुआ था।

उनके शिष्यों में उनके सुपुत्र प. रामजी मिश्र, पं. महापुरूष मिश्र, पं. ईश्वरलाल मिश्र, पं. छोटेलाल मिश्र, पं. काशीनाथ मिश्र आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

१० मार्च, १९५८ को चौवालिस वर्ष की आयु में गँगरिन बीमारी के कारण वाराणसी में उनका देहांत हुआ।

५.२३.१ ''मर्दाना गत ताल त्रिताल

धिंऽऽक्र	धिना	ऽऽऽकड	धिना ।	धिऽऽक्ड़	धिना	घिडनग	धिनतक ।
x				२			

धिरधिर	धिरधिर	ऽऽधिर	धिरकत्ऽ ।	धिरधिर	धिरधिर	किडनग	तिनतक ।	
०				३				
तिटक्रता	ऽनताऽ	ऽऽकता	ऽनताऽ ।	तिटक्ड़धा	ऽनधाऽ	घिडनग	धिनतक ।	
x				२				
धिनतक	तकतक	धिनधिन	तकतक ।	तकधिन	तकतक	तकधिन	धिनतक ।	धा''३२
०				३				x

'मर्दाना' शब्द से इस गत की रचना का अंदाज आता है। ये गत भारी बोलों से बन कर जोरदार रीति से सम पर आती है।

५.२४ पं. कंठे महाराज (बनारस घराना)

बनारस घराने के श्रेष्ठ तबलावादक पं. कंठे महाराज का जन्म सन १८८० के आसपास बनारस में हुआ। बचपन से ही पं. भैरव सहाय के पुत्र पं. बलदेव सहाय के पास उनकी तबला वादन की विधिवत् तालीम शुरू हुई। तीन बरस सीखाकर पं. बलदेव सहाय नेपाल के राजा के निमंत्रण से उधर जाकर स्थायिक हुए। पं. कंठे महाराज को गुरू एवं तालीम का विरह सहन न होने के कारण वे भी नेपाल जाकर रहे। उधर चार बरस पं. बलदेव सहायजीं ने उनसे अविश्रांत मेहनत लेकर उन्हें तैयार किया।

बनारस बाज की गत, परन एवं छंद आदि उनके अत्यंत प्रिय प्रकारों में पं. कंठे महाराज ने बहुत मेहनत ली। भारत के विविध संमेलनों में तबलावादन करके बहुत ख्याति प्राप्त की। वृद्धावस्था में भी वे उत्तम तबला बजाते थे।

पं. कंठे महाराज का बाज शुद्ध बनारस घराने का बाज था। वे लय-ताल के प्रकाण्ड विद्वान थे। गत, फर्द, लग्गी, लड़ी, बोलबाँट पर उन्होंने निपुणता प्राप्त की थी। बायाँ पर उन्होंने असाधारण अधिकार प्राप्त कर लिया था।

उनके शिष्यों में उनके भतीजे पं. किशन महाराज एवं पं. शारदा सहाय, पं. आशुतोष भट्टाचार्य एवं पौत्र पूरन महाराज उल्लेखनीय हैं।

अपना तबला एक मोक्षप्राप्ती का सुलभ साधन है, ऐसी उनकी श्रद्धा थी। आसन्नमरणावस्था में भी उन्होंने अपने लाडले भतीजे किशन को नजदीक बुलाकर एक गतपरन सीखायी एवं देह रख दिया।

१ अगस्त, १९६९ को निन्यानवे बरस की उमर में वे स्वर्गवासी हुए।

५.२४.१ ''फरमाईशी चक्रदार ताल - त्रिताल रचना - पं. कंठे महाराज

धाऽनधि x	किटधात्र	कधिकिट	धेतक्रधे ।
ऽतधाऽ २	क्रधाऽन	धाऽगदि	ऽनधाऽ ।
गदिऽन ०	घिडाऽन	धिनाकिटतक	ताऽऽऽ किटतक ।
दिऽनदिं ३	ऽननाना	कतधाऽ	नधाऽन ।
धाऽऽऽकिटतक x	दिंऽनदिं	ऽननाना	कतधाऽ ।
नधाऽन २	धाऽऽऽकिटतक	दिंऽनदिं	ऽननाना ।
कतधाऽ ०	नधाऽन	धाऽऽऽ,	धाऽनधि ।
किटधात्र ३	कधिकिट	धेतक्रधे	ऽतधाऽ ।
कधाऽन x	धाऽगदि	ऽनधाऽ	गदिऽन ।
घिडाऽन २	धिनाकिटतक	ताऽऽऽकिटतक	दिंऽनदिं ।
ऽननाना ०	कतधाऽ	नधाऽन	धाऽऽऽकिटतक ।
दिंऽनदिं ३	ऽननाना	कतधाऽ	नधाऽन ।
धाऽऽऽकिटतक x	दिंऽनदिं	ऽननाना	कतधाऽ ।

नधाऽन्	धाऽऽऽ	धाऽनधि	किटधात्र ।
२			
कधिकिट	केतक्रधे	ऽतधाऽ	कधाऽन ।
०			
धाऽगदि	ऽनधाऽ	गदिऽन	घिडाऽन ।
३			
धिंनाकिटतक	ताऽऽऽकिटतक	दिंऽनदिं	ऽननाना ।
x			
कतधाऽ	नधाऽन	धाऽऽऽकिटतक	दिंऽनदिं ।
२			
ऽननाना	कतधाऽ	नधाऽन	धाऽऽऽकिटतक ।
०			
दिंऽनदिं	ऽननाना	कतधाऽ	नधाऽन । धा'' ३३
३			x

प्रस्तुत बन्दिश की बोलरचना ऐसी की गई है कि बजाते समय शंखध्वनि सुनाई देती है।

५.२५ पं. किशन महाराज (बनारस घराना)

पं. किशन महाराज का जन्म सन १९२३ के सितंबर महीने की कृष्णाष्टमी को हुआ। इसी कारण उनका नाम 'किशन' रखा था। बनारस घराने के वाद्यशिरोमणि पं. कंठे महाराज के वे भतीजे थे। बचपन में उन्होंने तबले की तालीम अपने पिताजी पं. हरिरामजी से प्राप्त की। आगे की उच्च शिक्षा चाचाजी पं. कंठे महाराज के यहाँ हुई।

पं. किशन महाराज कुशाग्र बुद्धि के कलाकार थे। केवल बनारस घराने के ही नहीं तो तबले के सभी वादन विशेषताओं का उनका अध्ययन बहुत ही गहरा था। १२,१४,१६ आदि सम मात्रा के तालों पर उन्होंने प्रभुत्व पा लिया था। लयकारी से अधिक लगाव होने के कारण ९, ११, १३, १५, १९, २१ आदि विषम मात्राओं के ताल एवं अत्यंत कठिन क्लिष्ट लयकारियों के गणित उनके वादन के जरिए प्रस्तुत हुआ करते थे। प्रगत गणित, हर एक तालों पर स्वतंत्र विचार, तबले की भाषा पर प्रभुत्व, अत्यंत स्वच्छ और व्यवस्थित मांडणी, सुस्पष्ट निकास एवं कल्पनातीत तैयारी इन गुणों के

कारण उनका तबला वादन हमेशा ही अत्यंत आकर्षक होकर सामान्य श्रोताओं को भी मंत्रमुग्ध, मोहित करनेवाला था।

पं. किशन महाराजजी ने स्वतंत्र वादन में नाम कमाया था किन्तु अपने जमाने में वे गायन, वादन, नृत्य की साथसंगत के अत्यंत लोकप्रिय कलाकार थे। तंतुवाद्य की साथसंगत में वे माहिर थे ही, लेकिन कथ्थक नृत्य की उनकी साथसंगत अजोड़ थी। ख्यातनाम नृत्यकार पं. बिरजू महाराज, पंडिता सितारादेवी और पं. गोपीकृष्ण के साथ पं. किशन महाराज की साथसंगत सुनना रसिक श्रोताओं के लिए दावत ही होती थी।

भारत के अनेक संगीत संमेलनों में पं. किशन महाराज को निमंत्रण होते थे। सतेज, रेखीव चेहरा, टापटीप पोषाख, आकर्षक व्यक्तिमत्व के कारण वे श्रोताओं के मन को मोहित किया करते थे।

पं. किशन महाराज जी को उनकी संगीत की उपलब्धियों के लिए जीवन में अनेक मान-सम्मान और उपाधियां मिली थी।

- प्रयाग संगीत समिति इलाहाबाद द्वारा १९६९ में संगति सम्राट की उपाधि।
- मुंबई की सूरसिंगार संसद संस्था द्वारा उपाधि।
- केंद्रीय संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार।
- उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी द्वारा १९७२ में 'रत्न सदस्यता'।
- भारत के राष्ट्रपति द्वारा १९७३ में 'पद्मश्री' के सम्मान से अलंकरण।
- भारत सरकार द्वारा 'पद्मविभूषण' सम्मान।

तबलावादन के अलावा विद्यादान में भी वे रस लेते थे। उनके शिष्यों में उनके सुपुत्र पं. पूरन महाराज, पं. अनिल पालित (कलकत्ता), पं. तेजबहादूर निगम (कानपूर), श्री. सतीश चौधरी,

श्री. संदीप दास, श्री. जगदीश मिश्र, श्री. सुखविंदर सिंह, श्री. महेन्द्र सिंह, पं. कुमार बोस, पं. शशिकांत बेल्लारे (मुंबई) एवं श्री. नंदन मेहता (अहमदाबाद) विशेष उल्लेखनीय हैं।

पं. किशन महाराज जी का निधन ४ मई, २००८ को वाराणसी में हुआ।

५.२५.१ तिपल्ली दर्जेदार गत स्त्रोतागता यति रचना - पं. किशन महाराज

धाऽऽ	धिंऽन	तकिट	धिंऽन ।	
x				
धात्रक	धिटिट	कतग	दिगन ।	
२				
नगन	गनग	तकिट	धिंऽन ।	
०				
धात्रक	धिटिट	कतग	दिगन ।	
३				
धाऽऽगे	तकगेन	तकिटगे	तकगेन ।	
x				
धात्रकधि	तिटगन	कतगेन	कतगेन ।	
२				
नगनग	नगनग	तकिटगे	नकगेन ।	
०				
धात्रकधि	तिटगेन	कतगेन	कतगेन ।	
३				
धाऽऽधिंऽन	तकिट धिंऽन	धात्रकधिटिट	कतगदिगन ।	
x				
नगनगनग	तकिटऽधिंऽन	धात्रकधिटिट	कतगदिगन ।	
२				
धाऽतकिट	धाऽऽधात्रक	धिटिटकतग	दिगनधाऽऽ ।	
०				
तकिटधाऽऽ	धात्रकाधिटिट	कतगदिगन	धाऽऽतकिट ।	धा'' ३४
३				x

प्रस्तुत गत तिस्त्र, चतस्त्र फिर तिस्त्र जाति के प्रयोग के साथ लय के दर्जे करके सुंदरता से सम पर आती है।

५.२६ पं. भैरव सहाय (बनारस घराना)

पं. भैरव सहायजी बनारस घराने के प्रवर्तक पं. राम सहायजी के भतीजे एवं पं. गौरी सहायजी के पुत्र थे। जीवन की उत्तर अवस्था में पं. राम सहायजी ने इनको अपना शिष्य बना लिया था। पं. राम सहायजी के ये आखरी शिष्य थे। पं. भैरव सहायजी ने पाँच बरस की उमर में अपने चाचाजी से तबले की तालीम लेने का प्रारम्भ किया। पं. राम सहायजी ने पं. भैरव सहायजी को तैयार तबलावादक बनाया। कुछ वर्षों में पं. भैरव सहायजी ने तबला वादन पर अपूर्व अधिकार प्राप्त कर लिया।

पं. भैरव सहायजी 'आसभैरव' के भक्त थे। काशी के 'नीची बाग' मोहल्ले की 'आसभैरव' मूर्ति की पूजा करके तबले का अखंड रियाज़ करना, यह उनका दिनक्रम कई बरस नियमित रूप से शुरू था। इसी कारण १८ से २१ बरस में ही उन्होंने तबला वादन में प्रभुत्व संपादन किया था। इतनी युवावस्था में उन्होंने अपने तबला वादन में चमत्कार पैदा करके सामान्य श्रोताओं के साथ-साथ बड़े-बड़े गुणिजनों को भी आश्चर्यचकित कर दिया था। पं. भैरव सहायजी के पास विशाल भंडार था। स्वतंत्र तबला वादन में उन्हें कायदों का सम्राट कहा जाता था। साथसंगत में भी वे अजोड़ थे।

नेपाल नरेश राणा जंगबहादुरसिंह ने एक अत्यंत बड़ा संगीत-समारोह करके भैरवजी को निमंत्रण दिया था। उधर सुप्रसिद्ध सरोदवादक उ. नियामतुल्ला खाँ के साथ उन्होंने की हुई तबले की विलक्षण संगत अवर्णनीय हुई थी। उनके तबले की उत्स्फूर्तता पर खुश होकर नियामतुल्ला खाँ ने कहा, ''यह भैरवसहाय तबलिये नहीं, फरिश्ते हैं। इनकी अँगुलियों को खुदा ने आँखे दे दी हैं, इसीलिए तो साथी गवय्ये के सब गत-तोडे तत्काल साथ की साथ दिखाई देते रहते हैं।'' ३५ राणाजी ने खुश होकर उन्हें एक तलवार और रायफल भेट में दी।

१८१५-१८९४ यह पं. भैरव सहाय का जीवन कालावधि था।

५.२६.१ ''जनानी गत ताल त्रिताल

धिनगिन x	धागे तिरकिट	तिनतिन	तागे तिरकिट।
धिनधागे २	तिरकिट धिन	धागे तिरकिट	धिनगिन ।
धिनकत ०	किटतक	तकिटत	किटतक ।
तकिटधा ३	तिरकिट धिट	घेघेनक	धिनगिन । धा'' ३६ x

इस जनानी गत में नाजूक बोलों का समावेश किया जाता है।

५.२७ पं. सामताप्रसाद मिश्र - गुदई महाराज (बनारस घराना)

पं. सामताप्रसाद मिश्र का जन्म १९ जुलै, १९२० को बनारस घराने के संगीतज्ञ परिवार में प्रतप्पु महाराज के वंश में हुआ था। वे 'गुदई महाराज' के नाम से विख्यात हुए थे। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा उनके पिता पं. बाचा मिश्र के पास हुई। पिता की असमय मृत्यू के पश्चात् उन्हें बनारस घराने के महान वादक पं. विक्रमादित्य मिश्र उर्फ बिक्कू महाराज से तबले की तालीम प्राप्त हुई थी।

१५-१६ बरसों की कठोर मेहनत से उनके हाथों में बहुत ही चपलता, चमक एवं मिठास पैदा हुई थी। नृत्य एवं तंतुवाद्य की संगत में वे माहिर थे। दायाँ-बायाँ का संतुलन, अत्यंत जलद मंझिल में भी सुस्पष्ट निकास एवं आकर्षक मांडणी ये उनकी वादन विशेषाताएँ थीं। अत्यंत सुंदर, स्पष्ट, वजनदार, गूँजयुक्त, सशक्त और सुरीली चाट से एवं बायें के घुमार से वे रसिक श्रोताओं को मोहित किया करते थे।

बनारस घराने के अलावा दिल्ली घराने के कायदे वे महफिलों में बड़ी सुंदरता से पेश किया करते थे। ''गुदई महाराज बोलते थे कि ये तबले के घरानें हैं ना ये सुंदर बगीचा है, जिसमें हर एक घराने के सुंदर फुल मैंने देखे हैं। सभी घरानों को बजाने से ही हर एक की खुशबू पता चलेगी। इन सभी फुलों को मिलाके मैंने एक गुलदस्ता बना दिया और वो मैं आपके सामने प्रस्तुत करता हूँ।'' ३७ 'धिरधिर', 'तिरकिट', 'तकतक' इन बोलों पर उनका कमाल का प्रभुत्व था। रूपक, धमार

ताल पंडितजी को प्रिय होने के कारण इन तालों में भी उनका वादन तीनताल के इतना ही प्रभावी होता था।

महफिलों में सरोद, सितार, नृत्य की साथसंगत के साथ-साथ वे स्वतंत्र वादन भी बड़ी सुंदरता से करते थे। उनकी लय पक्की थी। स्वतंत्र वादन तथा साथसंगत के लिए वे अनेक सांस्कृतिक मंडलों में एवं विदेश में भी जाया करते थे। देश-विदेश में तबले को लोकप्रियता प्राप्त कर देने में पंडितजी का बड़ा सहयोग है।

सन १९४२ में अलाहाबाद विश्वविद्यालय की ओर से हुए अखिल भारतीय संगीत संमेलन में उनके अपूर्व तबलावादन के बाद देश के कोने-कोने से उन पर निमंत्रण का वर्षाव हुआ था। तबले के इस जादूगर ने पाँच दशक तक संगीत जगत् में बादशाहत की थी। उनको अनेक मान-सम्मान, पुरस्कार प्राप्त हुए थे। उनमें 'तबला का जादूगर', 'तबला सम्राट', 'संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार, हाफीजअली खाँ सम्मान', 'तालशिरोमणी', 'तालमार्तंड', 'पद्मश्री', 'पद्मभूषण' ये महत्त्वपूर्ण हैं। शास्त्रीय संगीत के सिवा उनके तबले की संगति का पार्श्वध्वनिमुद्रण अनेक संगीतप्रधान बोलपटों के लिए भी प्रयोग में लाया गया था। चित्रपट पार्श्वसंगीत के लिए कई बार किया हुआ उनका वादन अजरामर है। उन्होंने फिल्मों के माध्यम से तबला वादन में ख्याति अर्जित की थी। इसमें से कुछ फिल्मों के नाम हैं - झनक झनक पायल बाजे, मेरी सूरत तेरी आँखें, बसंत बहार, सूरेर प्यासी, असमाप्त, जलसा घर, शोले, नवाब वाजिद अली शाह, आदि।

उनके शिष्य परिवार में उनके सुपुत्र कुमार एवं कैलास, पं. जेरल मसी, पं. नवकुमार पण्डा, पं. चंद्रकांत कामत, पं. माणिकराव पोपटकर, पं. सुरेश तळवलकर, पं. वसंत पवार, पं. सत्यनारायण वसिष्ठ, पं. माणिकलाल दास उल्लेखनीय हैं।

३१ मे, १९९४ को पं. सुरेश तळवलकर और पं. शमा भाटे द्वारा पुना में आयोजित की गई कार्यशाला में हृदयविकार से उनका दुर्दैवी निधन हुआ।

५.२७.१ ''**गतटुकड़ा** समा यति रचना - पं. सामताप्रसाद

धागेऽदींगन x	धागेऽदिंऽन	धागेनधागेन	धाऽधाऽधाऽ ।
कतिटकतिट २	कतकतकत	धिटधिटधिट	धिटततगेन ।
धेत् धेत् धेत् ०	धेत्ऽतगेऽन्न	धाऽधाऽधाऽ	धाऽऽऽऽक्ड़ ।
धाऽनधाऽन ३	धाऽक्ड़धाऽन	धाऽनधाऽक्ड़	धाऽनधाऽन । धा'' ३८ x

प्रस्तुत छोटी रचना तिस्त्र जाति में निबद्ध है। तबला एवं पखावज़ के बोलों का मेल इसमें दिखाई देता है।

५.२८ उ. कादिर बख्श खाँसाहब (पंजाब घराना)

तबले के पंजाब घराने के प्रसिद्ध कलाकार उ. कादिर बख्श खाँसाहब का जन्म सन १९०२ के आसपास लाहोर में हुआ। भारत के विभाजन के बाद उन्होंने पाकिस्तान की नागरिकता स्वीकार कर ली और जीवन पर्यन्त वहीं रहे। उनके पिताजी उ. फकीर बख्श खाँसाहब एक पुराने और प्रख्यात पखावजी घराने के थे। बचपन से उ. कादिर बख्श खाँसाहब की तबला एवं पखावज़ की तालीम अपने पिताजी के पास हुई। पिताजी के देहान्त के पश्चात् पिताजी का योग्य शिष्य उ. करमइलाही से उन्होंने शिक्षा प्राप्त की।

नौ-दस वर्षो में ही उ. कादिर बख्श खाँसाहब कुशल वादक बने। वे सभी कार्य बाये हाथ से करते थे। उन्होंने अपने समय में खूब ख्याति अर्जित की थी। उ. कादिर बख्श खाँसाहब ताल विद्या और लयकारी के काम में दक्ष थे। पखावज़ एवं तबला इन दोनों वाद्यों पर उन्होंने समान प्रभुत्व पा लिया था। स्वतंत्र तबला वादन एवं साथसंगत पर उनका प्रभुत्व था। पुराने भारत में अनेक संगीत सभाओं में उन्हें बुलाया जाता था।

उ. कादिर बख्श खाँसाहब के शिष्यसमूह में मुख्य नाम है - रायगड के महाराज चक्रधर सिंह देव, महाराज टीकमगड़ (मध्य प्रदेश) और भारत के श्रेष्ठ तबला वादक उ. अल्लारखाँ।

उ. कादिर बख्श खाँसाहब का निधन सन १९६० को लाहोर में हुआ।

५.२८.१ लाहौरी गत तिस्त्र जाति ताल - त्रिताल

घेनाऽ	धाऽड़	घेनाऽ	धाऽड़ ।	धगन	गधिन	धगन	गधिन ।	
x				२				
तकत	धाऽड़	तकत	धाऽड़ ।	तकधि	नतक	तकधि	नतक ।	
०				३				
तकत	कतिन	तिनत	कतक ।	तिटति	टकता	कताग	द्दिगद्दि ।	
x				२				
घेघेधि	नधिन	घेघेधि	नधिन ।	धिरधिरकत्	धाऽड़धाऽड़	धिरधिरकत्	धाऽड़धाऽड़ ।	धा''[३९]
०				३				x

यह जुगल बोलों की गत है। ऐसी गतों को पंजाब घराने में 'लाहौरी गत' ऐसा सम्बोधन है।

५.२९ उ. अल्लारखा खाँसाहब (पंजाब घराना)

उ. अल्लारखा खाँसाहब का जन्म सन १९१५ में पंजाब के रतनगढ जनपद के गुरदासपूर में एक किसान परिवार में हुआ। उनके पिताजी हशिम अली खाँ संगीत क्षेत्र में नहीं थे। उ. अल्लारखा खाँसाहब को उपजत लयज्ञान था। उमर के १५-१६ वर्षो से वे पठाणकोट में रहने लगे थे और छोटी उमर में ही उन्होंने एक नाटक कंपनी में नौकरी पकड ली थी। उधर पंजाब घराने के उ. कादिर बख्श खाँ के शागिर्द उ. लाल महम्मद खाँ का उन्होंने गंडा बाँध लिया। कुछ बरस उनके पास सीख कर वापस गुरदासपुर आए और उन्होंने एक संगीतशाला शुरू की।

कुछ दिनों के बाद अपने चाचाजी के साथ लाहोर गए। तभी उधर उन्होंने उ. लाल महम्मद खाँसाहब के गुरू उ. कादिर बख्श खाँसाहब का तबलावादन सुना। प्रभावी होकर उनका शिष्यत्व लिया और उनसे पंजाब घराने की वादन-शैली का विधिवत् अध्ययन किया। वहाँ शिक्षा के साथ वे

एक रिकार्डिंग कम्पनी में भी काम करते रहे। उधर तबला याद करने के बाद उनके तबलावादन के कार्यक्रम लाहोर, दिल्ली नभोवाणी केंद्र से प्रसारित होने लगे। सन १९३७ में मुंबई नभोवाणी केंद्र पर स्टेशन डायरेक्टर बुखारी ने उनको तबलावादक की नौकरी दी। १९४२ तक उन्होंने यह नौकरी की। उसके बाद अपनी दृष्टि सिने सृष्टि की तरफ घुमा कर फिल्मी दुनिया में प्रवेश किया। सनराईज पिक्चर्स, मोहन स्टुडिओज, सादिक प्रॉडक्शन्स आदि अनेक कंपनी में काम करके रंगमहल स्टुडिओं में संगीत निर्देशक का काम किया। ए. आर. कुरेशी नाम से 'माँ-बाप', 'सबक', 'मदारी', 'आलम-आरा', 'जग्गा' जैसे अनेक फिल्मों को यशस्वी रीति से संगीत निर्देशन किया। बनायक, बजायक, बतायक के साथ सच्चे आदमी के रूप में भी वे उतने ही अच्छे, उदार, खुले स्वभाव के व्यक्तिमत्त्व थे। क्लिष्ट, अप्रतिम, सौंदर्यपूर्ण लयकारी एवं भाषा, वैशिष्ट्यपूर्ण वादनपद्धति और बुद्धिचातुर्य से उन्होंने असंख्य रचनाऐं की। दायाँ-बायाँ पर उनके हाथ का वजन अत्यन्त प्रमाणबद्ध था और उनकी लयकारी कल्पनातीत थी। दायाँ-बायाँ का संतुलन, गति, लयकारी एवं गहरा चिंतन ये उनके वादन की विशेषताएँ थीं। कठिन तालों में लयकारी के काम में पारंगत खाँसाहब निष्णात स्वतंत्र वादक एवं कुशल तबला संगतकार थे। स्याही के बोलों पर उनका प्रभुत्व था। उन्होंने साथसंगत का अपना एक नया तंत्र बनाया, उसे विकसित किया और लोकप्रिय बनाया, जो तबला जगत् के लिए बडा़ योगदान हैं। उ. अली अकबर खाँ, पं. रविशंकर जैसे सिद्धहस्त कलावंत उनको ही अपने साथसंगत के लिए लेते थे। तंतुवाद्य की संगत के साथ नृत्य की संगत करना उनके बाएँ हाथ का खेल था। सुप्रसिद्ध कथ्थक नृत्यकार पं. बिरजू महाराज के अनेक कार्यक्रम उन्होंने बजाए हैं। स्वतंत्र तबला वादन में उन्होंने उच्च कोटि का प्राविण्य प्राप्त किया था। त्रिताल के अतिरिक्त अन्य तालों में वे प्रभावपूर्ण सोलो वादन करते थे। उनकी असाधारण प्रतिभा देखते हुए सन १९७७ में भारत सरकार ने उन्हें 'पद्मश्री' उपाधि से सम्मानित किया था। उ. अल्लारखाँ की रचनाएँ प्रगत कलात्मक गणित के विविध रूपों से अलंकृत रहती थीं। उन्होंने अलग-अलग गढ़नों की, लयों की, विरामों की तिहाई, तिस्त्र जाति का पेशकार, तिपल्ली, कायदे, गतें, परन, चक्रदार, टुकड़े एवं चलन आदि सर्वांगसुंदर रचनाएँ बनायीं। पौन के विराम की तिहाई का श्रेय उ. अल्लारखाँ को ही जाता है। वे

आन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कलाकार थे। १९५८ में भारतीय सांस्कृतिक मंडल के प्रतिनिधि के रूप में तथा १९६० में युनेस्को के आन्तर्राष्ट्रीय महफिल के साथ देश-विदेश की अनेक महफिलों को उन्होंने गुलजार किया। लंडन के हाऊस ऑफ लॉर्डस् में अपनी कला पेश करनेवाले वे पहले ही भारतीय होंगे। एक स्वतंत्र तबलावादक, महान साथ-संगतकार, प्रतिभावान निर्मितिकार एवं समर्थ गुरू ये चारों भूमिकाएँ उन्होंने जबरदस्त ताकत के साथ निभाई।

उनके शिष्यों में उनके सुपुत्र उ. झाकिर हुसेन ने बेमिसाल ख्याति प्राप्त की है। इसके अतिरिक्त पं. योगेश समसी, निशिकांत बडोदेकर, अनुराधा पाल आदि नाम उल्लेखनीय हैं, जो उनकी परम्परा चला रहे हैं।

३ फरवरी, २००० को मुम्बई में उनकी मृत्यु हुई।

५.२९.१ **''त्रिपल्ली गत** स्त्रोतागता यति रचना - उ. अल्लारखाँ खाँसाहब

धाऽ	कृधा	तिट	धात्र ।	
x				
कधि	किट	केत्र	कधि ।	
२				
किट	तक	गदि	गन ।	
०				
धाऽ	तिऽ	धाऽ	धाक्ड़ ।	
३				
धातिट	धात्रक	धिकिट	केत्रक ।	
x				
धिकिट	कतग	दिगन	धाऽति ।	
२				
धाऽधा	क्डधा	तिटधात्र	कधिकिट ।	
०				
केत्रकधि	किटकत	गदिगन	धाऽतिऽ ।	धा'' ४०
३				x

इस गत में लय के तीन दर्जे (पल्ले) हैं। पहले पल्ले में दुगुन (प्रत्येक मात्रा में अक्षरसंख्या दोन), दूसरे पल्ले में तिगुन (प्रत्येक मात्रा में अक्षरसंख्या तीन) एवं तिसरे पल्ले में चौगुन (प्रत्येक मात्रा में अक्षरसंख्या चार) है। चतस्त्र-तिस्त्र-चतस्त्र जाति के क्रम से रचना की गई है।

५.३० उ. झाकिर हुसेन (पंजाब घराना)

उ. झाकिर हुसेन का जन्म मुम्बई में ९ मार्च, १९५१ को हुआ। उनकी तबले की शिक्षा पंजाब घराने के ज्येष्ठ तबलावादक और उनके पिताजी उ. अल्लारखाँ के पास हुई। पंजाब घराने का तबला, उ. अल्लारखाँ का स्वयं का तबला, उनकी निज़ी रचनाएँ एवं उन्हें प्रस्तुत करने की शैली ये सभी तालीम उ. झाकिर हुसेन को बचपन में ही प्राप्त हुई। प्रखर बुद्धिमत्ता एवं कठोर रियाज़ से उन्होंने तबले का ज्ञान आत्मसात किया। उ. अहमदजान थिरकवाँ खाँसाहब के मार्गदर्शन का लाभ भी उन्हें प्राप्त हुआ। फलत: अपने घराने के साथ फर्रुखाबाद शैली से भी उनकी पहचान हुई और उनका तबले का दृष्टिकोण विशाल बन गया। वे उन सौभाग्यशाली कलाकारों में से हैं, जिन्हें बचपन से ही पं. रविशंकर, उ. अलि अकबर खाँ, उ. विलायत खाँ जैसे महान कलावंतों से मार्गदर्शन एवं साथसंगत करने का अवसर मिला। देश-विदेश में उनके स्वतंत्र तबला वादन के कार्यक्रम एवं उनसे निर्देशित 'तालवाद्य कचेरी' के कार्यक्रमों को रसिकों की भीड़ होती है। 'ईस्ट मीटस् वेस्ट' जैसे पाश्चिमात्य वाद्यवृंद के कार्यक्रम भी वे करते हैं। चित्रपट में काम करना, संगीत देना ऐसे छंद भी उन्होंने जतन किए हैं। सन १९९७ में फिल्म 'साज' में उन्होंने संगीत निर्देशन किया था और उसमें अभिनय करके अपनी प्रतिभा का एक पक्ष और उज़ागर किया था।

उ. झाकिर हुसेन ने सूक्ष्म एवं संवेदनशील सौंदर्य दृष्टि से दायाँ-बायाँ से मधुर नाद निकालने का अपना खुद का निकास तंत्र निर्माण किया है। उन्होंने दाक्षिणात्य संगीत की लयकारियों का अध्ययन कर विविध लयकारियों का वादन में प्रयोग किया। सभी घरानों का खानदानी तबला अत्यंत तैयारी एवं आकर्षक रीति से पेश करने की कला उन्होंने साध्य की है। वे उत्कृष्ट सोलो वादन करते ही है, किन्तु उनकी समर्थ एवं अनुरूप साथसंगत से उनके विलक्षण प्रतिभा की अभिव्यक्ति प्रतीत होती

है। उनके वादन में सशक्तता, नजाकत एवं अपेक्षित परिणाम करने की क्षमता है। शास्त्रीय गायन तथा संतूर, बासरी, सरोद, सितार आदि सभी प्रकारों की साथसंगत वे प्रभावात्मकता के साथ करते है। लय पर उनकी हुकूमत एवं तबले से विविध नादध्वनियों को परिणामकारक रूप में व्यक्त करने की क्षमता के कारण दाक्षिणात्यों की तालवाद्य कचहरी अथवा पाश्चात्य ड्रम वादकों के साथ वे अत्यंत लीलया सहवादन भी करते हैं। नृत्य की साथसंगत के वक्त उनका हाजिरजवाबी तथा उत्स्फूर्त वादनकौशल प्रतीत होता है। पं. सुरेश वाडकर, पं. हरिहरन, पं. शंकर महादेवन के साथ सुगम संगीत की साथसंगत भी वे सुंदरता से करते है। देश-विदेश के अनेक मान सम्मान एवं उपाधियाँ उन्हें प्राप्त हुए हैं। भारत के राष्ट्रपति ने सन १९८८ में उन्हें 'पद्मश्री' और सन २००२ में 'पद्मभूषण' सम्मान से अलंकृत किया है। 'ग्रॅमी अॅवॉर्ड' से भी वे सम्मानित है। देश-विदेश में उनका विशाल शिष्य परिवार है।

५.३०.१ पंजाब घराने की बन्दिश ताल - त्रिताल श्री. स्वप्निल भिसे से प्राप्त

ताऽऽधि	नाऽऽऽकिटतक	ताऽतकी	टधिनाऽ ।
x			
किटतकताऽऽऽ	तकीटधि	किटकत्र	कधिकीट ।
२			
कताऽग	दीऽगन	धाऽताऽ	कतकताऽन् ।
०			
ऽऽऽऽधिरधिर	किटतकतक्ऽऽऽ	धिरधिरकिटतक	तक्ऽऽऽधिरधिर ।
३			
किटतकतऽकिट	धाऽऽऽऽऽऽऽ	ताऽऽऽ कतक	ताऽन् ऽऽऽऽ ।
x			
धिरधिरकिटतक	तक्ऽऽऽधिरधिर	किटतकतक्ऽऽऽ	धिरधिरकिटतक ।
२			
तऽकिटधाऽऽऽ	ऽऽऽऽताऽऽऽ	कतकताऽन्	ऽऽऽऽधिरधिर ।
०			
किटतकतक्ऽऽऽ	धिरधिरकिटतक	तक्ऽऽऽधिरधिर	किटतकतऽकिट । धा
३			x

प्रस्तुत बन्दिश की तिहाई चमत्कारपूर्ण है। कुल ३२ मात्रा में से बारहवीं एवं सत्ताईसवीं मात्रा पर तिस्त्र जाति का प्रयोग हुआ है। उनीसवीं एवं बीसवीं मात्रा क्रमश: चतस्त्र-तिस्त्र और तिस्त्र-चतस्त्र जाति में हैं। पंजाब घराने की सुन्दर बन्दिश है।

इस अध्याय में शोधकर्ती द्वारा प्रस्तुत, विद्वान बुजुर्गों की जीवनी, बन्दिशें एवं उनका विश्लेषणात्मक अध्ययन निश्चित रूप से सभी विद्यार्थियों के लिए प्रेरणादायी हो सकता हैं।

पाद-टिप्पणियाँ

१ डॉ. शिवेन्द्र प्रताप त्रिपाठी; तबला विशारद; प्रकाशक - कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्युटर्स नई दिल्ली; पृष्ठ क्र. १९

२ पं. सुधीर माईणकर; तबला-वादन कला और शास्त्र; प्रकाशक - अ. भा. गांधर्व महाविद्यालय मंडल मिरज; पृष्ठ क्र. २४२

३ डॉ. चिश्ती एस. आर.; तबला संचयन; प्रकाशक - कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्युटर्स नई दिल्ली; पृष्ठ क्र. २२२

४ पं. आमोद दंडगे; परिक्षार्थ तबला : विशारद; प्रकाशक - भैरव प्रकाशन कोल्हापूर; पृष्ठ क्र. ९०

५ पं. सुधीर माईणकर; तबला-वादन कला और शास्त्र; प्रकाशक - अ. भा. गांधर्व महाविद्यालय मंडल मिरज; पृष्ठ क्र. २५०

६ पं. सुधीर माईणकर; तबला-वादन कला और शास्त्र; प्रकाशक - अ. भा. गांधर्व महाविद्यालय मंडल मिरज; पृष्ठ क्र. २५१

७ प्रियंका मिश्रा - शोधछात्रा इलाहाबाद का लेख; संस्मरण : तबले के जादूगर पद्मभूषण पं. सामता प्रसादजी की स्मृति में; पृष्ठ क्र. ३१८

८ डॉ. आबान ई. मिस्त्री; तबले की बन्दिशें; प्रकाशक - संगीत सदन प्रकाशन इलाहाबाद; पृष्ठ क्र. १६९

९ डॉ. गौरांग भावसार; बंदिश-ए-तिनताल; प्रकाशक -ASCENT PUBLICATION MODASA; ISBN 978-81-325632-0-6; पृष्ठ क्र. ७३

१० पं. अरविंद मुळगांवकर; तबला; प्रकाशक - पॉप्युलर प्रकाशन मुंबई; ISBN 978-81-7185-526-1; पृष्ठ क्र. ३४९

११ पं. अरविंद मुळगांवकर; तबला; प्रकाशक - पॉप्युलर प्रकाशन मुंबई; ISBN 978-81-7185-526-1; पृष्ठ क्र. ३३८

१२ पं. अरविंद मुळगांवकर; तबला; प्रकाशक - पॉप्युलर प्रकाशन मुंबई; ISBN 978-81-7185-526-1; पृष्ठ क्र. ३३३

१३ डॉ. आबान मिस्त्री; पखावज और तबला के घरानें एवं परम्परायें; प्रकाशक - स्वर साधना समिति मुम्बई; पृष्ठ क्र. १४८

१४ पं. अरविंद मुळगांवकर; तबला; प्रकाशक - पॉप्युलर प्रकाशन मुंबई; ISBN 978-81-7185-526-1; पृष्ठ क्र. ३२९, ३३०

१५ पं. अरविंद मुळगांवकर; तबला; प्रकाशक - पॉप्युलर प्रकाशन मुंबई; ISBN 978-81-7185-526-1; पृष्ठ क्र. ३३२, ३३३

१६ डॉ. आबान मिस्त्री; पखावज और तबला के घरानें एवं परम्परायें; प्रकाशक - स्वर साधना समिति मुम्बई; पृष्ठ क्र. १५५

१७ पं. अरविंद मुळगांवकर; तबला; प्रकाशक - पॉप्युलर प्रकाशन मुंबई; ISBN 978-81-7185-526-1; पृष्ठ क्र. ३५४

१८ पं. हिमांशु महंत के साथ हुए साक्षात्कार दि. १९-१२-२०१९ से

१९ पं. अरविंद मुळगांवकर; तबला; प्रकाशक - पॉप्युलर प्रकाशन मुंबई; ISBN 978-81-7185-526-1; पृष्ठ क्र. १७४

२० डॉ. गौरांग भावसार; बंदिश-ए-तिनताल; प्रकाशक -ASCENT PUBLICATION MODASA; ISBN 978-81-325632-0-6; पृष्ठ क्र. ४४

२१ पं. अरविंद मुळगांवकर; तबला; प्रकाशक - पॉप्युलर प्रकाशन मुंबई; ISBN 978-81-7185-526-1; पृष्ठ क्र. ३६६

२२ पं. अरविंद मुळगांवकर; तबला; प्रकाशक - पॉप्युलर प्रकाशन मुंबई; ISBN 978-81-7185-526-1; पृष्ठ क्र. ३७३

२३ डॉ. गौरांग भावसार; बंदिश-ए-तिनताल; प्रकाशक -ASCENT PUBLICATION MODASA; ISBN 978-81-325632-0-6; पृष्ठ क्र. २४

२४ पं. अरविंद मुळगांवकर; तबला; प्रकाशक - पॉप्युलर प्रकाशन मुंबई; ISBN 978-81-7185-526-1; पृष्ठ क्र. ३७३

२५ पं. सुधीर माईणकर; तबला-वादन कला और शास्त्र; प्रकाशक - अ. भा. गांधर्व महाविद्यालय मंडल मिरज; पृष्ठ क्र. २४२

२६ पं. सुधीर माईणकर; तबला-वादन कला और शास्त्र; प्रकाशक - अ. भा. गांधर्व महाविद्यालय मंडल मिरज; पृष्ठ क्र. २४५

२७ पं. अरविंद मुळगांवकर; तबला; प्रकाशक - पॉप्युलर प्रकाशन मुंबई; ISBN 978-81-7185-526-1; पृष्ठ क्र. ३७६

२८ पं. अरविंद मुळगांवकर; तबला; प्रकाशक - पॉप्युलर प्रकाशन मुंबई; ISBN 978-81-7185-526-1 ; पृष्ठ क्र. ३७७

२९ पं. अरविंद मुळगांवकर; आठवणींचा डोह; प्रकाशक - पॉप्युलर प्रकाशन मुंबई; ISBN 81-7185-886-4; पृष्ठ क्र. १८३

३० पं. हिमांशु महंत के साथ हुए साक्षात्कार दि. १९-१२-२०१९ से

३१ पं. अरविंद मुळगांवकर; तबला; प्रकाशक - पॉप्युलर प्रकाशन मुंबई; ISBN 978-81-7185-526-1; पृष्ठ क्र. ३९८

३२ डॉ. आबान ई. मिस्त्री; तबले की बन्दिशें; प्रकाशक - संगीत सदन प्रकाशन इलाहाबाद; पृष्ठ क्र. १८५

३३ डॉ. गौरांग भावसार; बंदिश-ए-तिनताल; प्रकाशक -ASCENT PUBLICATION MODASA; ISBN 978-81-325632-0-6; पृष्ठ क्र. ५९

३४ डॉ. गौरांग भावसार; बंदिश-ए-तिनताल; प्रकाशक -ASCENT PUBLICATION MODASA; ISBN 978-81-325632-0-6; पृष्ठ क्र. ९८

३५ पं. अरविंद मुळगांवकर; तबला; प्रकाशक - पॉप्युलर प्रकाशन मुंबई; ISBN 978-81-7185-526-1; पृष्ठ क्र. ४२२

३६ डॉ. सुदर्शन राम; तबले के घराने, वादन शैलियाँ एवं बंदिशे; प्रकाशक - कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्युटर्स नई दिल्ली; पृष्ठ क्र. २३२

३७ पं. हिमांशु महंत के साथ हुए साक्षात्कार दि. १९-१२-२०१९ से

३८ डॉ. गौरांग भावसार; बंदिश-ए-तिनताल; प्रकाशक -ASCENT PUBLICATION MODASA; ISBN 978-81-325632-0-6; पृष्ठ क्र. ४५

३९ डॉ. आबान मिस्त्री; पखावज और तबला के घरानें एवं परम्परायें; प्रकाशक - स्वर साधना समिति मुम्बई; पृष्ठ क्र. १७४

४० डॉ. गौरांग भावसार; बंदिश-ए-तिनताल; प्रकाशक -ASCENT PUBLICATION MODASA; ISBN 978-81-325632-0-6; पृष्ठ क्र. ४५